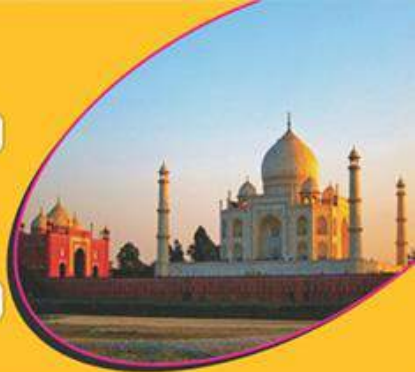




AGRADIANCE

"TO REACH THE GOOD NEWS TO THE POOR"

For Private Circulation Only



AGRA ARCHDIOCESAN NEWSLETTER

OCTOBER 2018

Jericho Cross in Agra



O Francis! Build my Church.

Archdiocese at a Glance...



Jericho Cross at Ajay Nagar, Anoop Nagar & Aligarh



Jericho Cross, Bharatpur



Gandhi Jayanti Celebration in Jesus & Mary, G. Noida & St. John Paul School, Fatehabad



Congrates Bp. Habil ! 5th Anniversary



NDoP, Havelock Church, Agra



ARCC Members Meet, Agra



HIV/AIDS Awareness Fatima Hsp., Agra



Our Youth in Prayer & Adoration



Nativity of BVM, Noida



Girl Child Day— St. Jude's Church, Kaulakha, Agra



Peace Walk, Sadbhavna, Mathura



Editorial

प्रिय मित्रों,

अग्रेडियन्स का अक्टूबर महीने का माला विनती विशेषांक आपके हाथों में है। अक्टूबर महीना वैसे तो धन्य कुँवारी मरिया की माला विनती प्रार्थना को समर्पित है, साथ ही यह सब मिशन/मिशनरियों की संरक्षिका संत तेरेसा के पर्व (पहली तारीख) से शुरू होकर रोज़री भक्ति के अंतिम दिन (31 अक्टूबर) को समाप्त होता है। इसी महीने के दौरान हम सात तारीख को पवित्र माला विनती का पर्व भी मनाते हैं।

इन दिनों हमारे महाधर्मप्रांत में दो बातों पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है, पहली है येरीखो क्रूस की उपासना एवं धन्य कुँवारी माता मरियम की माला विनती के प्रति भक्ति। पिछले महीने राष्ट्रीय करिश्माई केन्द्र, नई दिल्ली से आया येरीखो का पवित्र क्रूस आगरा धर्मक्षेत्र के विभिन्न धर्मप्रांतों में ले जाया जा रहा है। धर्मक्षेत्रीय क्रूस 18 नवम्बर को केरल पहुँच जायेगा। उसी प्रकार एक भव्य क्रूस हमारे अपने धर्मप्रांत की विभिन्न पल्लियों में इन दिनों भ्रमण कर रहा है। हालांकि इसके आगमन पर स्वागत करने या अगली पल्ली में भेजने के लिए कोई धर्मविधि या पूजन विधि निर्धारित नहीं की गई है, फिर भी एक दो स्थानों को छोड़कर प्रायः सभी जगह इसे भव्य समारोह के साथ लाया ले जाया रहा है। इस क्रूस के द्वारा ही प्रभु येशु ने संसार का उद्धार किया है। यही हमारी पहचान और निशानी है। तभी तो हम छाती तानकर गाते हैं, “क्रूस ही तेरा निशान, आगे बढ़ ऐ नौजवान! येशु ही तेरी चट्टान।” इस क्रूस के सम्मुख हम सब नतमस्तक हैं। कभी यह क्रूस राजाओं के मुकुट पर शोभायमान था, आज सभी मसीही घरों, संस्थानों और गिरजाघरों पर सगर्व विराजमान है।

अक्टूबर महीने में हमारे घरों और पल्लियों में माता मरियम की भव्य पालकियाँ सजाई जा रही हैं, जहाँ विश्वासी भक्तजन प्रतिदिन माला जपते देखे जा सकते हैं। जब और जहाँ-जहाँ माँ मरियम ने लोगों को दर्शन दिए हैं, वहाँ

दर्शनार्थियों को यही संदेश दिया है, कि वे निरन्तर रोज़री पढ़ें और अपने व पापियों के मन फिराव के लिए। माला विनती के सम्बन्ध में कोई विशेष नियम नहीं है। हम जब भी चाहें, जहाँ भी चाहे, अकेले या समुदाय में, खड़े होकर या बैठकर, बोलकर या गाकर, एक स्थान पर ठहरकर या चलते-फिरते माला का जाप कर सकते हैं। माँ मरियम हर पल हमारे साथ है और निरन्तर हमारे लिए प्रार्थना करती है।

2 अक्टूबर को गाँधी जयन्ती पर सद्भावना, मथुरा इकाई के माध्यम से निदेशक फादर वर्गीस कुन्तत ने कमाल कर दिखाया। उन्होंने करीब ढाई दर्जन स्कूल-कालेजों से सम्पर्क कर सम्बन्धित प्रशासन से अनुमति लेकर शांति पद यात्रा निकाली। अगले दिन यह शांतियात्रा मथुरा के इलेक्ट्रॉनिक व प्रिण्ट मीडिया में प्रमुख समाचार के रूप में छाई रही। इसी प्रकार फतेहाबाद में फादर डॉमिनिक जॉर्ज ने भी स्वच्छ भारत का नारा बुलन्द करते हुए मुख्य बाजार/मार्ग पर झाड़ू लगाई और अपने स्कूल के बच्चों के साथ पदयात्रा निकाली। ‘अग्रेडियन्स’ आपको नमन करती है।

इसी श्रृंखला में 2 तारीख को सेंट जार्ज कथीडूल, छावनी आगरा में देश के लिए राष्ट्रीय प्रार्थना दिवस का आयोजन किया गया। डा. राजू थॉमस (सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा) ने फिर एक बार हम विभिन्न वर्गों/डिनोमिनेशन के पुरोहितों/ पादरियों को एक वेदी पर लाने का अद्भुत कार्य कर दिखाया।

पास्टरल सेन्टर में धर्मक्षेत्रीय स्तर पर आयोजित तीन दिवसीय ऑल इण्डिया कैथोलिक काउंसिल (आगरा रीजन) को कैथोलिक एम एल सी श्री डेजिल गॉडविन एवं सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक व जुझारू नेता श्री छोटे भाई ने सम्बोधित कर हमें बताया कि हम अपने प्रशासनिक अधिकारियों में आस्था रखें। जब भी सम्भव हो अपने आसपास के विभिन्न धर्मावलम्बियों के साथ समधुर सम्बन्ध बनाएं। उनके तीज त्यौहारों में भाग लेकर अपनी शुभकामनाएं दें। इसी से एक अच्छे राष्ट्र (राम राज्य) की सुदृढ़ नींव रखी जा सकती है। सभी धर्मों में ईश्वर की ज्योति और सत्य की आत्मा निवास करती है।

हमारे अति श्रद्धेय बिशप प्रेम प्रकाश हाबिल ने 29 सितम्बर को अपने धर्माध्यक्षीय अभिषेक की पांचवी वर्षगाँठ मनाई। बिशप साहब को अग्रेडियन्स की हार्दिक बधाईयां।

चिर प्रतिक्षित संत क्लारा की निर्धन ध्यानमननशील मठवासिनी आगरा महाधर्मप्रांत पहुँच चुकी हैं। अभी संख्या में वे आधा दर्जन हैं। इतनी ही मठवासिनी और आने की उम्मीद है। आगरा महाधर्मप्रांत आपका हार्दिक अभिनन्दन करता है।

लोअर पादरी टोला निवासी श्रीमती ज्योति एवं श्री आलोक थॉमस के पुत्र जार्विस थॉमस ने एक बार पादरी टोला का नाम रोशन कर दिया है। सेंट पीटर्स कॉलेज, आगरा से गणित विषय में टॉप करने के बाद लोयोला कॉलेज, चेन्नई से बी.एस.सी. करके मिलिट्री ट्रेनिंग प्रवेश परीक्षा पास की और अब उनकी नियुक्ति भटिण्डा में लेफ्टीनेंट के रूप में हुई है। उन्हें हार्दिक बधाईयां।

इस वर्ष सेंट मेरीज़ चर्च के वार्षिकोत्सव पर “श्री एस. थॉमस मैमोरियल स्कॉलरशिप” का ईनाम कु. एनिषा मिशेल कुमार (सेंट मेरीज़ पल्ली, आगरा) को आई सी एस में कॉमर्स विषय में सर्वाधिक अंक 95.25% तथा कु. शेरिल लेजर (कथीडूल पल्ली, आगरा) को आई सी एस ई में 95% अंक प्राप्त करने के लिए दिया गया। सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा की ही कु. डेज़ी मैथ्यू को दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा से बी.ए. (अंग्रेजी) में सर्वाधिक ग्रेड प्राप्त करने के लिए महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा ने सम्मानित किया। आप सबको हार्दिक बधाईयां। “म्हारी छोरियाँ, छोरों से कम नहीं।” जागो लड़को... जागो।

असत्य पर सत्य की विजय के प्रतीक दशहरा पर्व की शुभकामनाओं सहित,

ख्रीस्त में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस (कृते, अग्रेडियन्स)

Yet another good from Padri Tola, Agra...

"Lord, I will lift up my eyes to the hills, knowing my help comes from you" (Ps 121:1).

As for God, His way is perfect. The word of the Lord is proven".



I, Lt. Jarves Thomas have experienced His grace, for today, I stand forth as an Army Officer serving my country with honour. My schooling was completed at St. Peter's College, Agra, a Catholic Institution, from where I passed with jubilant colours and achieved a name of honour and respect. After that, by God's grace, I got admission in one of the most reputed Colleges of India, St. Loyola College, Chennai, where I pursued B.SC. Mathematics. Gradually with the guidance and prayers of my mother Mrs. Jyoti Thomas and also my friend, Brother Louis who instructed me that with God, all things are possible. I cleared my CDS Exam and was finally called for SSB screening. My mother's prayers were never ending and they brought me also closer to God, as she said, "Those who seek God lack no good thing" (Ps 34:10). My family went to Velankani to Mother Mary to seek blessings for me, and truly, I could feel a miracle in my life. I got selected in the first attempt of SSB. Then I was trained from the Officers' Training Academy, Chennai. On September 2018, I passed out as a Lieutenant, the dream of my life, since early childhood. When I recollect, I can feel God's everlasting grace and mercy with me. I am very thankful to my parents', sacrifice, especially my father's, Mr. Alok Thomas and also the grace of Vailankanni Mother Mary. For it is correctly said, "If you will serve God, God will serve you". May the amazing grace of the Master, Jesus Christ, the extravagant son of God, the intimate friendship of the Holy Spirit be with you all. Thank you.

– Lieutenant Jarvis Thomas, Agra



Shepherd's Voice

*"The Month of the Mission and
of the Holy Rosary"*



The month of October brings many events that draw our attention. The feast of St. Theresa of the Child Jesus, the Little Flower, who is also the Patroness of missions, falls on October 1st. Second October invites celebration of the birth of Mahatma Gandhi and the Feast of Guardian Angels. Fourth October is the feast of the most remarkable saint of the time, St. Francis of Assisi, who bore the wounds of Christ in his body, who is also the messenger of peace and environmental preservation and protection, the rarest saint who identified himself with the poorest of the poor. The charism of St. Francis of Assisi is spread far and wide.

The feasts of the Blessed Virgin Mary occur in each month. October 7th is the feast of the Holy Rosary. The Parish of Our Lady of the Holy Rosary, Bastar, distinctly celebrates the feast. On 15th October we observe the feast of St. Theresa of Avila the Carmelite. On 16th October St. Margaret Mary Alacoque who promotes devotion to the Sacred Heart of Jesus, is remembered. St. Ignatius of Antioch, saint of the early church, is remembered on October 17th and the Apostle Luke's feast day falls on October 18th. The commemoration of saints does remind us of the call to holiness of life and the ministry and mission of sanctifying ourselves and of all creation. The call of the

Holy Father, Pope Francis, to all to be holy, can anchor on the lives of saints whom we are called upon to imitate being imitators of Christ Himself, who is the source of all holiness.

The Archdiocese of Agra is privileged to have the first monastery of the Cloistered Contemplative nuns, the first of its kind in the whole of our Region. The Monastery was established on October 4, 2018, bearing the name "St. Francis of Assisi Monastery of Poor Clares (Colletines)". The community initially consists of six members, while another six members are expected to join in a period of a year. We trust the Divine Providence for more vocations to contemplative life. This form of life is the right form of response to the seriously damaging maladies and threats in society and to humanity directly. Ethical-moral degradation resulting in lowest forms of immorality, injustice, violence, corruption and dehumanizing conditions do invite a way of penance, repentance, reparation, reconstruction, renewal and reorientation. St. Francis of Assisi heard Christ from the Cross asking him to renovate the Church. This did give rise not only to renovation of the Church of Damiano, but work for reparation, reconstruction, renewal of believing individuals and communities. As he founded the men's congregation of the First Order, he also founded the contemplative nuns

of the Second Order, St. Clare being the foundress of Poor Clares. The life of POOR CLARES consisted of daily accepting the personal commitment to pray, and to make penance, reparation, repentance and sacrifice for the evil of the world and for the sanctification of the Church. The Poor Clares by the establishment of the Monastery at Etmadpur, shall be instrumental to make reparation for the sinfulness of the world with specific intercessory prayers for the local Church. This Monastery shall also be an inspiration of missionary enthusiasm in the Archdiocese and in the Region. The sponsorship of any type in supporting the Sisters in the Monastery would be encouraged. Their life of contemplative prayer and sacrifice will always have intercessory effects on us all. We unite ourselves with the community dedicated to perpetual Eucharistic Adoration in our prayers. To this effect, the Monastery shall also be known as "ARADHANA".

Incidentally, the festival of Dashera falls in mid-October. During these days, the Priests in the Archdiocese will be in the spiritual exercise of the Annual Retreat for personal holiness, renewal and for common renewal. I invite all in the Archdiocese to add a prayer for the intentions of the Retreatant Priests who will be in prayer from October 15 to 19, 2018. The Priests' retreat as community exercise does prove to be the channel of prayer power, while the Cloistered community shall always be the power house of the Archdiocese from where will flow the fragrance of sanctity and manifold favours

from God.

October is the month dedicated to Our Lady of the Rosary. We meditate the essential mysteries of our faith during the prayer of the Rosary, an easy community and family prayer in the difficult times of the life of the Church. The continued prayer of the Rosary down the centuries, has proved to be a powerful source of strength. The Church Universal and the Church in our country do face difficult times. The contemplative nature of the prayer of the Rosary shall have its role to surmount the difficulties we face in our times too.

The tradition of recitation of the Rosary in families and in parish communities in our Archdiocese is a source of growth in holiness and of Christian sanctification.

It is also of importance that the Synod on Youth with the theme "Young People, the Faith and Vocational Discernment" is being convened in Rome from October 3-28, 2018. Our prayers are raised for the success of the Synod, where Youth are the focus.

Pope Francis notes that "the theme, an expression of the pastoral care of the Church for the young, is consistent with the results of the recent Synod Assemblies on the Family and with the content of the post-Synodal apostolic exhortation "Amoris Laetitia. Its aim is to accompany the young on their existential journey to maturity so that, through a process of discernment, they discover their plan for life and realize it with joy, opening up to the encounter with God and with human beings, and actively participating in the edification of the Church and society". It is hoped, the "Year


of Youth" in our Archdiocese shall steer forward the much needed youth-faith renewal.

World Mission Sunday falls on October 21st. The theme offered is "Together with Young People, Let us Bring the Gospel to All". Proclamation of the Gospel and making disciples of all nations by personal witnessing and dialogue of life in our circumstances shall prove effective if we are vigilant, devout and faithful in our practice of faith in spite of multiple forms of challenges and opposition in our society. Besides prayers, it is desired

that all communities of Christians come forward to make financial contribution in solidarity with the Pontifical Missionary Societies of the Evangelization of Peoples. The Church Universal and the local Church do depend on the contributions of the faithful.

May October be a month of the Mission and of the Holy Rosary.

God bless you.



✠ Albert D'Souza
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

मिशन और पवित्र माला विनती का महीना

अक्टूबर महीने में घटने वाली बहुत सारी बातें हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। बालक येशु की संत तेरेसा, जो सभी मिशनों की संरक्षिका हैं और एक छोटे पुष्प के नाम से भी जानी जाती हैं, का पर्व पहली अक्टूबर को मनाया जाता है। अक्टूबर महीने की दो तारीख को हम अपने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयंती और अपने संरक्षक स्वर्गदूतों का पर्व समारोह मनाते हैं। चार अक्टूबर को इतिहास के एक सर्वाधिक विशिष्ट संत, असीसी के संत फ्रांसिस का महापर्व मनाते हैं। संत फ्रांसिस ने अपने शरीर में प्रभु येशु के घावों को अनुभव किया और उन्हें सहा। वे ही शांति और पर्यावरण-संरक्षण सुरक्षा के दूत (संवाहक) के रूप में भी जाने जाते हैं। वे ऐसे एक विरले संत हैं, जिन्होंने निर्धनों में से भी सर्वाधिक निर्धन के साथ स्वयं को जोड़ लिया था। संत फ्रांसिस असीसी का करिश्मा/प्रभाव शीघ्र ही चारों दिशाओं में फैल गया।

धन्य कुँवारी मरियम के पर्व हरेक महीने में मनाए जाते हैं। 7 अक्टूबर पवित्र माला विनती का त्योहार है।

बस्तर स्थित हमारी होली रोजरी पल्ली इस दिन विशेष रूप से अपना त्योहार मनाती है। 15 अक्टूबर को हम आविला की संत तेरेसा (कामेलाइट) की याद करते हैं। 16 अक्टूबर को संत मागरिट मेरी अलाक्यो, जिन्होंने पाक दिल येशु की भक्ति को बढ़ावा दिया, का पर्व मनाते हैं। प्राचीन कलीसिया के संत, अंताखिया के संत इग्नेशियुस का त्योहार 17 अक्टूबर को मनाया जाता है और प्रेरित संत लूकस का पर्व 18 तारीख को मनाया जाता है।

संतों की याद करने के द्वारा हमें भी यह याद दिलाया जाता है, कि हम भी पवित्रता का जीवन जीने और स्वयं तथा समस्त सृष्टि को शुद्ध करने के लिए बुलाए गए हैं। संत पिता फ्रांसिस भी हमें एक नेक (पवित्र) जीवन जीने का आह्वान करते हैं। स्वयं प्रभु येशु ख्रीस्त सब पवित्रता का उद्गम/स्रोत है।

आगरा महाधर्मप्रांत का यह सौभाग्य है, कि न सिर्फ धर्मप्रांत बल्कि पूरे धर्मक्षेत्र में पहली बार संत क्लारा द्वारा स्थापित ध्यान चिंतन करने वाली मठवासिनी

धर्मसंघनियों के पहले मठ (आश्रम) का हमारे महाधर्मप्रांत में पिछले दिनों शुभारम्भ हुआ है। इस मठ का नाम संत फ्रांसिस असीसी, निर्धन क्लारा का मठ (कॉलेण्टाईंस) रखा गया है। अभी उनके इस समुदाय (कम्युनिटी) में छः सदस्याएं हैं। अन्य छः सम्भवतः एक वर्ष के भीतर ही आ जाएंगी। हमें दैवीय कृपा पर पूर्ण भरोसा है कि इस प्रकार मनन चिंतनशील जीवन जीने के लिए और भी बुलाहटें आगे आएंगी। इस प्रकार का जीवन/बुलाहट समाज को गम्भीर रूप से बांटने या नुकसान पहुंचाने वाली शक्तियों के प्रति एक उचित जवाब है। असीसी के संत फ्रांसिस ने क्रूस से प्रभु की पुकार सुनी, कि 'वह कलीसिया का पुनरुद्धार करें। इसका परिणाम यह हुआ कि, न केवल दामिआनो के चर्च का पुनरुद्धार हुआ, किन्तु सभी विश्वासी व्यक्तियों व समुदायों के पुनरुद्धार का काम भी प्रारम्भ हो गया। संत फ्रांसिस ने पुरुषों के धर्मसंघ 'फर्स्ट ऑर्डर' की और साथ ही ध्यानशील मठवासिनी महिलाओं के धर्मसंघ निर्धन क्लारा की धर्मबहनें नामक **सैकण्ड आर्डर** की स्थापना की। संत क्लारा इस धर्मसंघ की संस्थापिका हैं।

संत क्लारा की इन निर्धन मठवासिनी धर्मबहनों का जीवन प्रार्थना, अपना व्यक्तिगत समर्पण करना तथा साथ ही पाप से दुनिया को बचाने व कलीसिया के शुद्धिकरण के लिए प्रायश्चित्त करना है। एत्मादपुर (आगरा) में इन ध्यानशील मठवासिनी धर्म संघिनियों का समुदाय निश्चय ही अधर्मी संसार के लिए प्रायश्चित्त तथा स्थानीय कलीसिया के विभिन्न मतलबों के लिए प्रार्थना व त्याग करेगा। साथ ही यह मठ हमारे धर्मप्रांत व समूचे धर्मक्षेत्र में लोगों को मिशन के प्रति उत्साह भरने की प्रेरणा देगा। मठवासिनी धर्मबहनों की किसी भी प्रकार से सहायता करने में आपका स्वागत है। मठवासिनी ध्यानशील धर्मबहनों के मननशील प्रार्थनामय

और परित्याग का पुण्य फल हमें प्राप्त होगा। हम अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उनसे जुड़ सकते हैं, जो दिन रात पवित्र परमप्रसाद की आराधना-स्तुति में लगी रहती हैं। इसी कारण इस मठ का नाम 'आराधना' रखा गया है।

संयोग से इसी अक्टूबर महीने के बीच में दशहरे का पर्व भी है। इन दिनों हमारे धर्मप्रांत के पुरोहित अपनी वार्षिक आध्यात्मिक साधना में लीन होंगे। यह साधना जरूरी है। हमारी व्यक्तिगत पवित्रता एवं नवीनीकरण तथा सामुदायिक नवीनीकरण के लिए जरूरी है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूं कि हमारे पुरोहितों के लिए, जो 15-19 अक्टूबर 2018 तक अपनी वार्षिक आध्यात्मिक साधना कर रहे हैं, उनके इरादों के लिए प्रार्थना करें। पुरोहितों की साधना एक सामुदायिक साधना या क्रिया है, जिसके माध्यम से हमें प्रार्थना की शक्ति मिलती है। वहीं दूसरी ओर आराधना की मठवासिनी बहनों का समुदाय समस्त महाधर्मप्रांत के लिए शक्ति का भण्डार है, जहां से पवित्रता की सुगन्ध एवं ईश्वर के बहुत वरदान मिलेंगे।

अक्टूबर महीना माता मरियम की पवित्र माला को समर्पित है। माला विनती/ जाप के द्वारा हम अपने विश्वास की आवश्यक गहराइयों पर ध्यान करते हैं। यह कलीसिया के कठिन समय में सामुदायिक एवं पारिवारिक प्रार्थना सिद्ध हुई है। सदियों से माला विनती जाप से विश्वासियों ने शक्तिशाली स्रोत की शक्ति प्राप्त की है।

हमारे परिवारों और पल्ली समुदायों में माला विनती जाप की प्रथा हमारे महाधर्मप्रांत में शुद्धता में वृद्धि करने तथा ख्रीस्तीय पवित्रता में निरन्तर आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध हुई है।

रोम शहर में इस समय 3-28 अक्टूबर 2018 तक चलने वाली धर्मसभा का विषय भी संयोगवश "युवाओं में विश्वास और बुलाहट की पहचान" है। हम इस

धर्मसभा की सफलता के लिए विशेष प्रार्थना करें, जहां युवा वर्ग इस सभा का मुख्य केन्द्र बिन्दु है।

संत पिता फ्रांसिस यह मानते हैं, कि वर्तमान धर्मसभा का विषय कलीसिया द्वारा युवाओं की धार्मिक व आत्मिक देखभाल से संगति/अनुरूप है। साथ ही यह अभी हाल ही में परिवार को ध्यान में रखकर सम्पन्न हुई सभी धर्मसभाओं एवं प्रेरितिक आह्वान (प्रपत्र) 'अमोरिस लैतिशिया' से पूर्ण सामंजस्य में है। यह आशा की जाती है, कि हमारे महाधर्मप्रांत में यह वर्तमान युवा वर्ष हमारे युवाओं में विश्वास का नवीनीकरण करने में अहम भूमिका निभाएगा।

विश्व मिशन रविवार 21 अक्टूबर को मनाया जाएगा। इस वर्ष का विषय है; युवाओं के साथ मिलकर हम सब जन तक सुसमाचार पहुंचाएं। वर्तमान परिस्थितियों में अपने निजी जीवन के साक्ष्य एवं जीवन के संवाद द्वारा

सुसमाचार की घोषणा और सभी राष्ट्रों को शिष्य बनाना तभी संभव होगा, जब हम अपने विश्वास में जागृत, सच्चे, गंभीर एवं विश्वासी बनेंगे। तभी हम अपने समय की सभी चुनौतियों एवं विरोधों का दृढ़तापूर्वक सामना करने में सफल होंगे। प्रार्थनाओं के साथ-साथ यह भी आशा की जाती है कि सभी ख्रीस्तीय समुदाय आगे आएँ और आर्थिक सहयोग भी करें। वैश्विक एवं स्थानीय कलीसिया अपने विश्वासियों की सहयोग राशि पर आश्रित है।

मेरी कामना यह है, कि अक्टूबर महीना मिशन और पवित्र माला विनती का महीना हो।

ईश्वर आप सबको आशिष दे।

✠ आल्बर्ट डिसूज़ा
(आगरा के आर्चबिशप)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (OCTOBER, 2018)

- | | |
|---|---|
| 1 Holy Mass, Little Flower Convent, MSST Sisters, Greater Noida | 13 Holy Mass, Feast Day, Fatima Convent, Agra |
| 2 Holy Mass, Poor Clares Monastery, Etmadpur; Gandhi Jayanti, Mathura | 14 Holy Mass, Pastoral Visit, Cathedral of the Immaculate Conception, Agra |
| 3 Holy Mass, Poor Clares Monastery, Etmadpur | Priests' Annual Retreat begins- First batch |
| 4 Holy Mass, Formal blessing of Cloistered Community of Poor Clares, St. Francis of Assisi Monastery (Colletines) | 15 Departure to Bangalore |
| 5 Holy Mass, St. Francis Church, Hathras | 16 Caritas India-Regional Chairmen and Directors' Meeting, Bangalore |
| 6 To Bareilly-Sacerdotal Golden Jubilee, Fr. Conrad OFM Cap | 19 Visit to Lucknow |
| 7 Holy Mass, Feast of Our Lady of the Rosary, Bastar | 20 Holy Mass, AINACS, Lucknow |
| Arrival in Agra | 21 Sacerdotal Golden Jubilee of Priests, Lucknow |
| 11 Meeting of Archdiocesan Consultors, Cathedral, Agra | 22 Arrival in Agra |
| 12 Holy Mass, Feast of Our Lady of Pilar, Dholpur | 26 Annual Day, St. Joseph's School, Kasganj |
| | 27 Holy Mass, Golden and Silver Jubilee and First Profession, FCC Sisters, Etah |
| | 28 Holy Mass, Pastoral Visit, St. Joseph's Church, Greater Noida |
| | 29 Visitation of St. Joseph's School, G. Noida |

संत फ्रांसिस: दूसरा ख्रीस्त



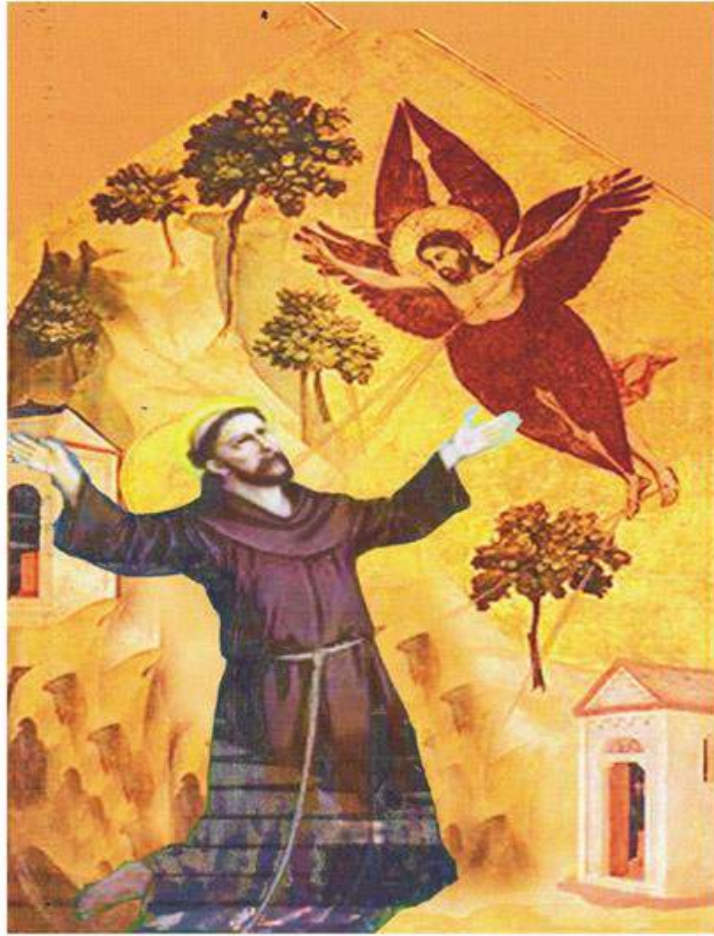
जब-जब समाज अपने लक्ष्य से विचलित होकर आसुरी प्रवृत्ति ग्रहण कर लेता है तथा सम्पूर्ण सृष्टि विनाश के कगार पर आ जाती है तब-तब महान आत्माओं का अविर्भाव होता है। मानव इतिहास ऐसी महान आत्माओं का साक्षी है। उनका उन्नत चरित्र व

उज्ज्वल आदर्श मानवता की अक्षुण्ण निधि है। असीसी के संत फ्रांसिस ऐसी ही महान आत्माओं में अग्रणीय माने जाते हैं। प्रकृति प्रेमी, समाज सुधारक, सच्चे ईश्वर भक्त 'फ्रांसिस' द्वितीय ख्रीस्त, सभी के संत, असीसी का निर्धन आदि नामों से जाने जाते हैं। यद्यपि इनका देहावसान सैंकड़ों वर्ष पूर्व हो चुका है फिर भी ये अपने शिष्यों की अंतरात्मा में समाहित होकर सम्पूर्ण विश्व को प्रेरित कर रहे हैं।

'मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीता है,' अतः केवल शरीर के लिए ही नहीं अपनी आत्मा के लिए भी मनुष्य को भोजन की आवश्यकता होती है। वह भोजन है; ईसा का रक्त व शरीर। इस भोजन द्वारा मनुष्य को आत्मिक तृप्ति मिलती है तथा उसका वास्तविक कल्याण होता है। तभी मानव जीवन सार्थक तथा पूर्ण होता है।

असीसी के संत फ्रांसिस का जन्म 26 सितम्बर 1180 ई. को हुआ था। इनके जन्म पर असीसी नगर स्वर्गदूतों

के गीतों से गूंज उठा था। फ्रांसिस के जीवन की बहुत सी बातें प्रभु येशु के जीवन से मिलती जुलती हैं। प्रभु ईसा मसीह ने कहा था, "चिंता मत करो अपने जीवन निर्वाह की, कि हम क्या खायें या पीयें? न ही अपने शरीर की कि हम क्या पहनें? क्या यह जीवन भोजन से बढ़कर नहीं? क्या शरीर कपड़ों से बढ़कर नहीं? आकाश के पक्षियों को देखो, वे न तो बोते हैं, न लुनते हैं और न बखारों में जमा करते हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्गिक पिता



तुम्हें खिलाता है। तुम सबसे पहले ईश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो और तब ये सब चीजें तुम्हें यो ही मिल जाएंगी।" (मत्ती

6:25-33) उपर्युक्त सभी बातों को असीसी के संत फ्रांसिस ने अपने जीवन में उतारा तथा सभी को इस शिक्षा का ज्ञान कराया। प्रभु ईसा मसीह ने अपने बारह शिष्यों को अशुद्ध आत्माओं को निकालने तथा हर प्रकार की बीमारी व दुर्बलता को दूर करने का अधिकार दिया। इसी प्रकार संत

फ्रांसिस ने भी अपने अनुयायियों को भेजकर वैसा ही किया। प्रभु ईसा मसीह की भांति इनमें भी सदैव विनम्रता बनी रही। इन्होंने भी अपने अनुयायियों को एकांत में ले जाकर प्रार्थना की। प्रभु ईसा ने अपने शिष्यों से कहा, "जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले" वैसा ही संत फ्रांसिस ने भी कहा। प्रभु ईसा मसीह की तरह इन्होंने भी

अलौकिक कार्य किये। प्रेरिताई तथा कठिन बीमारियों से चंगाई के कार्य किए। जिस प्रकार ईसा मसीह को शैतान ने अत्यंत पीड़ा पहुंचाई उसी प्रकार संत फ्रांसिस को भी दी। शैतान फ्रांसिस की विनम्रता और सहनशीलता से पराजित होकर वापिस चला गया।

प्रभु मसीह की तरह संत फ्रांसिस ने मन परिवर्तन, प्रार्थना व प्रेरिताई के कार्यों से ओतप्रोत जीवन जीया तथा स्वर्ग राज्य का सन्देश फैलाया। प्रभु ईसा मसीह की भांति इन्होंने भी अपना जीवन दूसरों को पाप से बचाने में लगा दिया। अंतिम दिनों में अनेक बीमारियों से ग्रस्त होने पर भी प्रभु की महिमा गाने में लगे रहे, कभी भी मृत्यु से नहीं डरे।

3 अक्टूबर 1226 ई. को संध्याकाल में उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, “स्तोत्र 142 जोर से पढ़िए, “मुझे बंदी गृह से निकालो, जिससे तेरा नाम धन्य कहूँ।” यह स्त्रोत पढ़ते ही संत फ्रांसिस की आत्मा इस संसार को त्याग कर स्वर्ग की ओर उड़ गई।

जब प्रभु ईसा मसीह ने गोलगोथा में प्राण त्यागे थे, तब माता मरियम, संत योहन तथा अन्य स्त्रियां उन्हें देख रहे थे। वे अरिमथिया के यूसुफ द्वारा पिलातुस से अनुमति लेकर आने तक इंतजार कर रहे थे, उसी प्रकार संत फ्रांसिस के शिष्य एक पहर तक उनके शव को देख रोते रहे, मिनिस्टर जनरल ब्रदर एलियास ने भी उसी दिन उनका शव देखा था। उन सभी को लगा कि मानो क्रूसित प्रभु ही उनके बीच में लेटे हों। देखो “दूसरा ख्रीस्त”। जिस तरह प्रभु मसीह का पार्थिव शरीर पवित्र माता मरियम की गोद में तथा संत योहन और माता मरियम, मरियम मगदलेना चुम्बन ले रहे थे, उसी प्रकार ब्रदर बर्नाड, जाकपोन आदि संत फ्रांसिस के पवित्र शव का आदर व भक्ति भाव से चुम्बन करते हुए आत्मीय सुख का अनुभव करते रहे। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभु ईसा मसीह व असीसी के संत फ्रांसिस में काफी समानता है। इसलिए संत फ्रांसिस को सभी जाति, धर्म, काल व देशों में बिना किसी भेदभाव

के सभी लोग महात्मा के रूप में मानते हैं।

प्रभु ईसा मसीह के जन्म का गौशाला बनाकर हर्ष व उल्लास के साथ मनाने का रिवाज संत फ्रांसिस ने ही आरम्भ किया था। एक ‘द्वितीय ख्रीस्त’ बनने के लिए संत फ्रांसिस की जीवन शैली हमें सदैव प्रोत्साहित करती रहेगी।

फ्रांसिस्कन धर्मसंघ का दुनिया में प्रथम स्थान है। संसार में इस विशाल परिवार के करीब 25 लाख सदस्य हैं। गर्व की बात है कि इन धर्मसंघों के भक्तों द्वारा प्रस्तुत संत फ्रांसिस आज भी सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्ध हैं। इन्हें द्वितीय ख्रीस्त (दूसरे मसीह) के नाम से भी पुकारा जाता है। वे कैथोलिक ईसाइयों के प्रेरणादायी कार्यों के संरक्षक संत के रूप में माने जाते हैं।

सिस्टर मेरी, असीसी कान्वेण्ट, एटा

HOLY FATHER'S INTENTION OCTOBER - 2018

Evangelization: The Mission of Religious That concerned religious men and women may bestir themselves, and be present among the poor, the marginalized, and those who have no voice.

DATES TO REMEMBER OCTOBER

- | | |
|----|----------------------------|
| 1 | B.D. FR. VARGHESE K. |
| 5 | B.D. FR. PRAKASH D'SOUZA |
| 7 | B.D. FR. TOMY V. A. |
| 21 | B.D. FR. EUGENE M. LAZARUS |
| 28 | O.D FR.PRAVEEN RAJ MORAS |
| 28 | O.D FR.SIJU PINDIKANAYIL |
| 28 | O.D FR.TONY D'ALMEIDA |
| 28 | O.D FR.JOSEPH KUMAR PASALA |
| 28 | O.D FR.PRAVEEN D'COSTA |
| 28 | O.D FR.PRAJ |
| 28 | O.D FR.PRAKASH RODRIGUES |
| 28 | O.D FR.SANTEESH ANTONY |
| 29 | B.D. FR. THOMAS K.C. |

माता मरियम की माला विनती के प्रति हमारी भक्ति

माता मरियम के आदर में माला विनती की प्रथा कब से शुरू हुई- इस विषय में हमें कोई निश्चित जानकारी नहीं है। तीसरी और चौथी सदी में कुछ रेगिस्तानी मठवासी रस्सियों में कुछ गाँठें बांधकर उसे प्रार्थना के उपयोग में लाते थे। सन 431 की एफेसुस की महासभा के साथ मरियम भक्ति को बढ़ावा मिलने लगा। कुछ परम्परा के अनुसार सन 1214 में माता मरियम ने संत दोमिनिक को दर्शन दे कर उन्हें पवित्र माला विनती प्रदान की थी।

सन 1569 में संत पापा पीयुस पाँचवें ने कलीसिया में औपचारिक रीति से माला विनती की शुरुआत की। सन 1571 में संत पापा पीयुस पाँचवें ने यूरोप के ख्रीस्तीय विश्वासियों से आग्रह कि वे लेपान्तो की लड़ाई में विजय के लिए माला विनती प्रार्थना करें। इस प्रार्थना के फलस्वरूप जब उन्हें विजय प्राप्त हुयी, तब उस विजय को उन्होंने अक्टूबर 7 तारीख को विश्व की माता मरियम के त्योहार के रूप में मनाया। बाद में इस त्योहार का नाम बदलकर माला विनती की माता मरियम का त्योहार रखा गया।

सन 1883, सितंबर 1 तारीख को संत पापा लियो तेरहवें ने अपने लोक परिपत्र सुप्रेमी अपोस्तोलातुस ओफीचियो में माला विनती को समाज को सताने वाली बुराइयों का मुकाबला करने का सबसे प्रभावशाली आध्यात्मिक हथियार बताया। उत्पत्ति 3:15 में ईश्वर कहते हैं, “मैं तेरे और स्त्री के बीच, तेरे वंश और उसके वंश में शत्रुता उत्पन्न करूँगा। वह तेरा सिर कुचल देगा और तू उसकी एड़ी काटेगा।” माला विनती संत योहन तेईसवें तथा संत योहन द्वितीय की पसंदीदा प्रार्थना थी।

संत योहन पौलुस द्वितीय ने अपने लोक परिपत्र रोजारियुम विर्जीनिस मरिये के द्वारा ज्योति के पांच भेदों को माला विनती में शामिल किया।



माला विनती में हम प्रभु येशु के पास्का रहस्यों को मनाते हैं। इसमें ग़ब्रिएल दूत के द्वारा माता मरियम को सन्देश देने की घटना से लेकर मुक्तिप्राप्त मानवजाति की प्रतिनिधि के रूप में माता मरियम के स्वर्गारोहण तथा मुकुटधारण तक की घटनाओं पर हम ध्यान-मनन करते हैं। हम माता मरियम के साथ मिलकर प्रभु येशु ख्रीस्त के रहस्यों पर ध्यान-मनन करते हैं। संत लूकस अपने सुसमाचार में दो बार हमें बताते हैं, कि माता मरियम ने येशु के जीवन के रहस्यों को अपने हृदय में संचित रखा (लूकस 2:19, 51)।

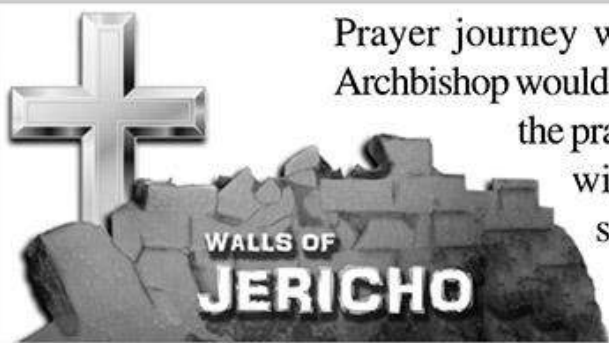
प्रेरित चरित 1:12-15 में हम पाते हैं कि करीब 120 लोग प्रभु येशु के स्वर्गारोहण के बाद अटारी में माता मरियम के साथ पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा में प्रार्थना कर रहे थे। तत्पश्चात पवित्र आत्मा उन सब पर उतरते हैं। जब कभी हम माला विनती करते हैं, हम उसी शिष्य समुदाय के समान माता मरियम के चारों ओर एकत्रित होकर प्रार्थना करते हैं। माला विनती में हम ईशवचन दुहराते हैं। हे पिता हमारे; प्रार्थना, प्रभु की ही प्रार्थना है, जिसे प्रभु ने अपने शिष्यों को सिखाया था। इसलिए हम इसे परिपूर्ण प्रार्थना कह सकते हैं। लूकस 1:28 के अनुसार स्वर्गदूत ग़ब्रिएल ने माता मरियम को ‘प्रणाम मरियम’ कहकर संबोधित किया था। यह पवित्र ग्रन्थ में एक असाधारण बात है कि किसी को भी स्वर्गदूत बड़े आदर के साथ प्रणाम करते हैं। अक्सर हम यह पाते हैं कि स्वर्गदूत को देखकर लोग भयभीत होते हैं और स्वर्गदूत गंभीरता से अपना सन्देश सुनाकर चले जाते हैं। परन्तु माता मरियम के पास आकर स्वर्गदूत ग़ब्रिएल उनको प्रणाम करते हैं। “प्रणाम मरिया, कृपापूर्ण प्रभु तेरे साथ है” - ये शब्द स्वर्गदूत के ही हैं।

शेष पृष्ठ 19 पर

Jericho - Prayer undertaken by NCCR, U.P. and Uttarakhand Regions

The National Catholic Charismatic Renewal Services held a meeting with CBCI in Bangalore on February 7, 2018 to explain the need of Jericho Prayer and to organize this prayer nationwide throughout India in 7 regions from May 2018 to May 2019. Our Agra Diocese falls in the North Zone II-Uttar Pradesh and Uttarakhand having 9 dioceses. The purpose of this devotion is to pray for peace in our diocese and in India. In the past, many Jericho marches have been organized in many countries, against Abortion or Terrorist activities. It is a test of faith, trust in God to move, and a test of obedience.

Accordingly, Most Rev. Francis Kalist of Meerut Diocese and Episcopal Advisor to the NCCR, Priests and representatives from difference dioceses of our Region gathered together in the Parish Hall of Lucknow Diocese on July 17, 2018. Most Rev. Francis Kalist explained to the delegates/representatives about the importance and intention of the Jericho prayer, explaining Joshua Ch. 6. In the meeting, it was discussed to prepare the schedule of the JERICHO PRAYER to be conducted at the zonal level as well as at the parish level. Fr. Joseph Dabre, Parish Priest and Mr. Francis Xavier Xaxa from St. Mary's Church, Noida, represented the Agra Diocese. In the meeting it was decided to recite the prayer from August 15th to September 8th, 2018, which the persons appointed by the Bishop, would prepare for their own dioceses for success of the journey. Jericho



Prayer journey would start from Agra. The Archbishop would offer the Holy Mass and recite the prayer in his own diocese. There will be two crucifixes. Prayer services could be conducted on the occasion to give proper reverence to the

Crucifix which would be blessed by the Bishop and taken to other dioceses. On the same occasion, the Bishop will also bless another Crucifix which will be taken to all the parishes of the diocese, beginning from that day, according to convenience and schedule prepared by the appointed person, in consultation with the parish priest, starting from the day the Jericho Prayer is conducted in the diocese.

The Crucifix journey started on September 9, 2018 from Agra diocese. Two crucifixes were blessed by Most Rev. Albert D'Souza, the Archbishop and Most Rev. Francis Kalist, Bishop of Meerut, during the holy Mass. After holy Mass there was a procession. One blessed Crucifix was taken to the next diocese, Meerut on September 10th, by Fr. Joseph Dabre, Fr. Moon Lazarus, Mr. Alfie Rosemeyer and Mr. Francis X. Xaxa. On completion of the Jericho Cross journey in 9 dioceses, it returned to Agra on September 18th, 2018.

The same Crucifix is to be carried to the Divine Retreat Centre, Muringoor, on November 18, 2018. The cross travelled in the diocese would be placed on the Map of India, prepared there at the intercessors' gathering from November 18-21, 2018.

Francis Xavier Xaxa, St. Mary's, Noida

The Holy Family of Nazareth should be our Ideal

Aji Thomas, St. Fidelis Church, Aligarh

This essay won the first prize at the Diocesan level Essay Competition organised by ARCC.



Family is a unit where parents live with their children in harmony. The

Holy Family is the one that can be considered as an ideal for others. We have different role models in life --- some times in the form of

people, their personality or way of life. For Christian families, the Holy Family of Nazareth should be our ideal. In today's world, when divorces and separation are becoming common, children are taking up wrong paths of life, the Holy Family of Nazareth shows the path of the way of life, they show by example how a family that is united can withstand trials of life. The peculiar characteristics of the Holy Family of Nazareth are:

1. Acceptance of the Word: The biggest speciality of the Holy Family of Nazareth is the whole hearted acceptance of the Word of God. When Angel Gabriel appeared before the Virgin Mary and told her about God's plan for her, she wholeheartedly said; "I am the handmaid of the Lord, be it done to me according to your word". She did not care about the dogmas prevalent in the society, nor about what people would say. Similarly, Joseph had thought of divorcing Mary quietly because he was a righteous man, yet he decided to take her as his wife, when the Angel of the Lord appeared and told him to do so.

In the same way in our families, there may be imperfections. Pope Francis himself said that we do not have perfect families. Instead of broadcasting our family problems to others, we should look for God's Word in it.

2. Hardworking: The Holy Family of Nazareth

worked hard for their livelihood. Joseph, who was a carpenter, worked hard to look after his family when they were in exile. Jesus also worked alongside His father and learnt his trade. A document of Vatican II emphasizes the need of men and women working to provide livelihood for themselves.

A good Christian family should also not depend on help from family and friends but earn their own livelihood. The Church emphasizes on dignity of labour and we should realize that it is better to eat like a poor person with your earnings, than live like a king on charity.

3. Endurance: The capacity to bear pain is endurance. The Holy Family of Nazareth bore pain that was meted out to them. After Jesus was born and King Herod went on a rampage killing young children under the age of two years, Joseph and Mary along with their new born child endured the long journey to Egypt. Joseph did not wait for the morning; rather he left with Mary and the baby in the middle of the night. Similarly, when Simeon had prophesied that "a sword will pierce your heart", to Mary, she silently pondered upon it, and when Jesus was to be crucified she remembered the prophecy that was made.

In the same way, families should endure pain that they receive. They must not be critical about the faults of others. Joseph never criticized Mary for His pain or trouble. Families should not blame each other.

4. Acceptance and belief in children: When Mother Mary found out that they were without wine in the wedding at Cana, she asked Jesus to help them out. He immediately replied "my time has not yet come, what is with you woman". Mother Mary was not offended by His words. She believed in

the goodness of her Son and therefore told the servants: "Do whatever He tells you".

5. Forgiveness: The Holy Family of Nazareth was very forgiving. When Jesus was left behind at the temple at the age of 12, His parents forgave Him for His misgiving. Later on in His life, when Jesus was talking to the crowds, His Mother and brothers stood outside. He replied when someone told Him, His mother and brothers are outside. "Who is my Mother and who are my brothers... Whoever does the will of my father is my brother and Mother".

In the same way, in families, we should forgive the mistakes of our family members. Forgiving others does not demean or make you small, rather it makes you strong. A mother who was publicly disowned by her son, bore His pain with Him on His journey to the Cross.

6. Sanctuary: The home should be a sanctuary, a safe place for children to grow. Joseph and Mary provided a safe place for Jesus to grow. Joseph was like a guardian angel, protecting Mary and Jesus from all evil. King Herod, Mary from punishment according to the Mosaic law for being pregnant out of wedlock (Leviticus 20:10).

As Joseph spoke through his actions, similarly Christian families should proclaim the Gospel through their actions. Joseph emptied himself of SELF.... We need to learn to give our 'Yes' to God's Word. Empty SELF....ourselves to God. Let our homes be sanctuaries for children where they can grow to their full ability. Let parents silently nurture their children...leading by example.

7. Obedience: Jesus was a model of obedience. He was born of a virgin, a son of a carpenter and He was obedient to His parents. From the age of 12, when He was accidentally left behind at the temple, He started His public life. He lived with them and was obedient to them. He grew in wisdom and in years and in divine and

human favour. Children should also be obedient to their parents in all matters. Even in their growing years, when children are not in agreement, they should be obedient to their parents.

8. Love: The Holy Family reflected its love for each other in different instances. Joseph and Mary search for their son. Mary supported her son in His mission and it was the love and concern.

We should add love as an important ingredient in our family life. Money, status and other things are temporary... they do not define life. But 1Corinthians 13:4-5 says "Love is patient, love is kind. It doesn't envy, it does not boast...it keeps no record of wrongs".

9. Prayer: It is the base of all strong families. It is rightly said "A family that prays together stays together". Prayer is a glue that binds families together. Jesus was able to explain the Scriptures and hold His way among scholars because He was taught at home. Even though the Bible does not mention it explicitly, it is inherent. Jesus grew in wisdom of men and of God.

Similarly, families should devote time for prayer. Prayers should be recited together, not individually. A family is brought together by prayer.

If we deeply study the sacrifices, the trials, the problems, the sorrow, the joyous occasions, the pain....endured by the Holy Family, surely we will be able to live as good Christians; not just by birth, but by the virtue of our lives. We will enact the love and suffering of Christ, through our life. Accept God's hand in everything...even in pain...even when it does not look right...even when others gain and you lose...even when people who are corrupt are praised...we are followers of Christ. We will proclaim our Christianity not just by our birth or wearing religious symbols, but by our love and our life. And they will know we are Christians by our love.

From Affliction to Glory - Part 4



When we go through affliction, we have to develop courage and perseverance. As you are operating in faith things may grow worse than before, the circumstances may get rough, but praise be

to God, faith has the power to turn every situation in our favour, that is why the devil tries to test our faith. That is why most of the time it is not the problem with faith, but it is because we start to grow unbelief.

There are thoughts of how the situation is growing worse, it will not be smooth sailing and there will be battles. We have got to have friends around us who will build us up in the midst of trials with faith. People who talk about your problem with you, without faith, will only give you an emotional high, which destroys your faith. The friends who take the Scripture and battle the problem with you, are the friends that will build you up.

Having this understanding about what trials can accomplish enables us to have a joyful attitude towards such trials. We have to consider the trial, nothing but joy, knowing that the testing of your faith will produce patience, will bring the best out of you and when you let patience have its perfect work, it will truly turn your trials into triumph.

We have to be deaf to every negative situation that comes in our life, but we must be attentive to the voice of the Good Shepherd. Not acting in patience is like an athlete participating in a sprint, who stops mid-way to shout back at all the observers in the stand, who are cheering for the opponent, that runner will definitely end up last.

Ask yourself when you are angry, what are the first words that come out of our mouth? If they are words of attack, words of offence, then we prophecy curses on ourselves and even on those we love. If negative words come out of our mouth, we have deactivated the blessing and activated the curse in our life and in the lives of others as well.

That is why, it is extremely important to let patience have its complete work in us, which means we hold on to the promise of God and waiting on the Lord to do the needful. I am sure, many of you have experienced that when you were in the heat of trial, you kept quiet and everything worked itself out and at other times you let out a barrage of words and things get worse.

The Lord is teaching us something very practical. In the beginning you will feel like a food, but if you practice it, you will find that patience brings forth such great wonders in your life, which is beyond your imagination.

Fr. Dennis D'Souza

Matrimonial Classified

1. A beautiful Roman Catholic Malayali girl from Kottayam, age 26, height 5.2 ft., born and brought up in Rajasthan, working as a Software Engineer in Delhi-NCR. Her parents are searching for proposals from the parents of suitable Roman Catholic Malayali boys working in India or abroad. Mob: 09414147552 / 07976548288

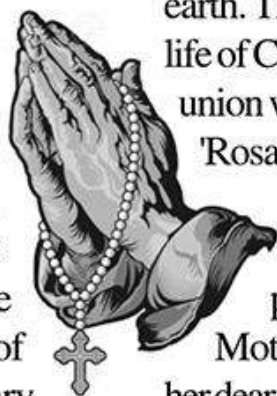
2. Knanaya Catholic Doctor, born and brought up in the U.S.A. is looking for a suitable partner. He is 36 years old, working in a reputed hospital in New York. Height 5.11 ft.

Contact: 9412266641

Devotion to the Rosary • Jiby Lukose, St. Mary's Church, Agra

'Rosary' means garland of roses - the Rose is a symbol of Mother Mary. The Rosary has an important place in showing who a Catholic is among a group of people as many Catholics wear it around their neck. In their cars and in other places they keep a Rosary blessed by priests or brought from some holy place. Many Catholics say the Rosary individually and in groups. In most Catholic homes, the evening prayers consist mainly of the Rosary.

St. Dominic Guzman (1170-1221), the founder of the Dominican congregation is reported to be the pioneer of the piety of the Rosary. St. Dominic in his prayer spoke to the Holy Mother about his pain and the circumstances he had to encounter. She said recite 15 Our Fathers and 150 Hail Mary's during the preaching. Dominic followed a new style in his preaching. He would speak about an incident in the life of Jesus, followed by prayers to Mother Mary.



Gradually it developed into the Rosary prayer. Dominic began the Rosary as it is practiced. After meditating upon an event in the life of Jesus, ten Hail Marys were recited.

The Rosary became popular through various Rosary groups. The Rosary got official recognition in 1571 when Pope Pius V declared October 7th as the Feast of the Mother of the Rosary. It was done as an act of gratitude for a great blessing the Church received through the recitation of the Rosary. Pope Leo, XII in 1883, declared October as the month of the Rosary. He encouraged the recitation of the Rosary in the Church with the exposition of the Holy Eucharist. Pope Pius XII said it as part of the family prayer.

It was John Paul II (1978-2005) who added the Mysteries of Light to the Rosary. Thus, the

mysteries reached 20. He once wrote that in leading the faithful in Christianity has a big and praiseworthy role. Pope Paul VI (1963-1978) had written that if no importance is given to the Mysteries of the Life of Christ in the Rosary, it will be like a body without a soul.

The Rosary has been an important sacramental that has enriched the faith of Catholics for centuries. The Rosary is an aid to salvation as it has deep and powerful connection to the Bible and the Divine mysteries that are tied to Jesus' redemptive stay on earth. The Rosary binds Catholics to the historical life of Christ and it suggests our eternal destiny and union with Christ in heaven. The mysteries of the 'Rosary, Translate the Bible into Prayer'.

I believe, that the Rosary is a very powerful prayer which can bring healing and peace of mind. When we pray to Mary our Mother, like any good mother, Mary will help her dear children on earth. Mary's intercessory power is strong before the throne of God because Jesus would not deny His Mother's requests.

Many miracles have occurred throughout the world by praying the Rosary, like the 'Fatima Miracle of the Sun'. Our Blessed Mother appeared to three shepherd children-Jacinta, Francisco and Lucia in Fatima, Portugal, when they were praying the Rosary.

On October 7th, the Roman Catholic Church celebrates the annual feast of Our Lady of the Rosary. The feast day is celebrated in honour of the 16th century naval victory which secured Europe against Turkish invasion. Pope St. Pius V attributed the victory to the intercession of the Blessed Virgin Mary, who was invoked on the day of battle through a campaign to pray the Rosary throughout Europe.

तुम पृथ्वी के नमक हो!

“तुम पृथ्वी के नमक हो, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जायेगा?” (मत्ती 5:13) जीवन में नमक सस्ता लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है। अगर खाने में नमक न हो तो खाना स्वादहीन है, नमक डालने से खाने में स्वाद आ जाता है। प्रभु यीशु नमक की तरह हैं, जो हमारे निराश, स्वादहीन जीवन को स्वाद से परिपूर्ण कर देते हैं। पुराने जमाने में नमक का मुख्य कार्य भोजन सामग्री को सुरक्षित रखने में भी किया जाता था। अगर मांस पर नमक छिड़क दिया जाए तो महीनों तक बिना रेफ्रिजरेटर के उसे सुरक्षित रखा जा सकता है। नमक उसे सड़ने से बचाता है। जब आदम ने पाप किया तो वह इस संसार में मरण, पाप और आज्ञा उल्लंघन यानी सड़न लाया। संपूर्ण जगत में प्रथम मृत्यु मनुष्य (आदम) के कारण आई। कोई उससे नहीं बच सकता, केवल प्रभु येशु ही बचा सकते हैं।

प्रभु येशु अपने शिष्यों को यही बनने की सीख देते हैं ‘नमक बनो, लोगों के जीवन को और सड़क से बचालो।’

लूथ और उसकी बेटियाँ स्वर्गदूतों की बात मानकर सदोम से दूर भाग गए। न ही रुके, ना ही उन्होंने पीछे मुड़कर देखा। मगर लूथ की पत्नी ने स्वर्गदूत की बात नहीं मानी। वे लोग सदोम से थोड़ी ही दूर आए थे कि लूथ की पत्नी रुक गयी और पीछे मुड़कर देखने लगी। उसे अपना घर और घर में रखी चीजें बहुत प्यारी थीं। लेकिन जैसे ही उसने पीछे मुड़कर देखा, वह नमक का खंभा बन गयी। इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि ‘परमेश्वर सिर्फ उन लोगों को बचाता है, जो उसकी बात मानते हैं। जो लोग परमेश्वर की बात नहीं मानते, उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ती है।’

सुसमाचार-प्रचार और प्रार्थना करना मूल्यहीन लग सकता है। ऐसे विचार शैतान मन में डालता है। एक मसीही जन जो बाहर के जगत में जाकर प्रचार के द्वारा किसी भी एक पापी जन का मन फिराव करने में सफल

होता है, तो वह इस संसार का बहुमूल्य कार्य करता है। नमक के सही गुण स्वाद मनुष्य में दिखते हैं। वह अपने स्वाद से दूसरे का जीवन है। एक व्यक्ति को, जो अपने परिवार और मित्रों से निराश हो चुका है और जो पूरी तरह से अपने जीवन से उब चुका है उसे चर्च ले आते हैं। हालाँकि जिंदा रहने का कोई कारण समझ नहीं आता है। चर्च में ईश्वर का वचन सुनकर उसे शान्ति मिलती है। उसके सारे तनाव दूर हो जाते हैं इसलिए प्रभु येशु ने हमें पृथ्वी का नमक कहा।

राजन फ्रांसिस खाखा, सेंट मेरी चर्च, नोएडा

A Pension Scheme to be Launched

At the suggestion of our Parish Priest, Rev. Fr. Philip Correia, during the Parish Council meeting, we have decided to start a "Pension Scheme" for the dependent elderly and the sick members of our parish.

This partial help is in view of helping them to live a dignified life without totally depending on the mercy of others.

During his Sunday homily, our Parish Priest appealed to all the Institutions, Communities and well to do families of the parish to contribute generously towards this noble cause. So far the response is very positive and encouraging as many are coming forward with monetary help.

Our target is to reach as many recipients as possible, both at the parish level and outside the parish boundaries.

The most comforting and consoling aspect of this scheme is that needy recipients do not have to follow or fulfil any formalities.

May God bless our humble beginning.

Prince Lee

Sacred Heart Church, Mathura

Mary, The Woman of God

Mother of God, Mother of the Redeemer, Mother of the Son of God, Mother of the Church, Mother of Christians, are the titles we remember when we think of Mary, the humble maiden of Nazareth. Immaculate Conception, Ever-virgin, Mother of God, and Assumption are the eternal truths taught by the Church about this Virgin. Our separated brethren protest against all these dogmas concerning Mary saying, they are non-biblical. Even in their preachings and conventions, they don't mention the name of Mary. In their writings and exhortations, they highlight some of the exemplary Old Testament women than Mary. They do away with all the Catholic teachings about Mary. The great concern of the church today is to find a middle way to explain Mary's role in the history of salvation.

As we pray the Sacred Scriptures, we could find a great truth mentioned about her which I would call, "the Gospel of Mary, the Woman of God." Gospel because it is good news that is proclaimed in the Bible and that is to be proclaimed by every Christian. The entire Bible is the Good News of God proclaimed by God himself through the lips and writings of the sacred authors. The first person who proclaimed about 'Mary, the Woman', was God Himself. In Gen.3:15 we read God proclaiming about the woman and her offspring to our first parents. We see in Is. 7:14 that the prophet Isaiah proclaiming that the young woman is with a child and shall bear a son. Again the prophet Jeremiah (31: 22) proclaims about a woman encompassing a man which he calls a new thing created by God on earth.

In the Gospel, St Luke proclaims about the woman named Mary, the mother of Jesus,

through the lips of Elizabeth: "Blessed are you among women and blessed is the fruit of your womb" (1:42). In the entire Bible no other woman is proclaimed as blessed, other than Mary, the mother of Jesus. St. Peter proclaimed Mary through the writings of St Mark. The beloved disciple proclaims that Jesus called His mother, as woman. Thus he proclaims Mary, the Woman. St Paul proclaimed the woman to the Galatians (4; 4). Again in the Revelation, St John proclaims the woman as he saw a vision (ch.12). The entire Bible tells us about this woman, that she is proclaimed and should be proclaimed. Every Christian is aware that this woman is none other than Mary, the mother of Jesus. If Jesus our Lord called His mother, 'woman,' then the word came from his lips is good news for us and for the world. Because no one on earth calls one's own mother, 'woman'.

The word 'woman' is a mystery. If it is a mystery it is from God and therefore this woman cannot be an ordinary woman; rather the Woman of God. This is the title given to the Virgin-Woman who gave birth to the Son of God in the Bible. Indeed Mary is truly the Woman of God - a woman par excellence. The woman who is blessed among all women. Blessed is her womb that bore and her breast that nursed the Son of God. She is the blessed woman of faith who believed what God has promised would be fulfilled. The Woman of our Proclamation. She is hailed, blessed and proclaimed in the Scriptures. Let us hail her, bless her and proclaim her and thus we would be enabled to honour her, venerate her and exalt her.

Fr. Xavier G.

Fatima Mission, Ajay Nagar, Mathura

बच्चों के जीवन में योग का महत्व

भारतीय संस्कृति में योग विद्या का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। योग शास्त्र बहुत प्राचीन शास्त्र है। महर्षि पतंजलि ने इससे दौ सौ वर्ष पहले 'योग साधना' की रचना सूक्ष्म रूप में की थी। इस शास्त्र में मानव शरीर में मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक परिवर्तन करने की शक्ति तो है ही साथ ही इसमें व्यक्तिगत, सांस्कृतिक स्तर और पूरे समाज के सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा उठाने की क्षमता भी है। इसीलिए यह शास्त्र मानव जाति के लिए वरदान है।

योग मनुष्य को स्वास्थ्य और नवशक्ति देता है। व्यक्तिगत गुणों का विकास तथा नैतिक, शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक आदि स्तरों पर सर्वांगीण विकसित करते हुए जीवन की दैनिक कठिनाइयों का धैर्यपूर्वक सामना करने का मनोबल देता है। इसलिए आम आदमी अपने जीवन में कोई भी छोटा-बड़ा लक्ष्य रखकर योग को अपनाएगा, तो उसे उसका सर्वस्पर्शी ज्ञान अवश्य प्राप्त होगा।

आज के युग में बहुत तनाव है, दुःख है, गरीबी है। दोनों माँ-बाप को नौकरी करनी पड़ती है। कभी कभी नौकरी के लिए माँ-बाप को अलग-अलग स्थान पर काम करने के लिए जाना या रहना पड़ता है। इसलिए वे अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते। माँ-बाप की परेशानियाँ देखकर बच्चों में भी तनाव में आ जाते हैं। वे अपनी परेशानी बता नहीं सकते क्योंकि वे उम्र में छोटे हैं और उनका ज्ञान बहुत कम होता है। इसलिए वे नटखट बन जाते हैं। उनका व्यवहार नकारात्मक हो जाता है। वह पढ़ाई नहीं करना चाहते। दूसरे बच्चों को तंग करते हैं। दूसरों को परेशान करने में उनको आनन्द आता है। स्कूल में दूसरे बच्चों की चीजें चुराते हैं। टीचर या माँ-बाप अपने बच्चों को समझ नहीं पाते हैं, और उन्हें हर गलती



के लिए दण्ड देते हैं। ऐसे बच्चे स्कूल जाने से कतराते हैं। प्रिंसिपल उन्हें स्कूल से निकाल देते हैं।

कुछ बच्चों में 7 और 12 साल तक की उम्र में असंतुलन आ जाता है। शारीरिक विकास और मानसिक विकास एक साथ नहीं होते। कभी कभी, शारीरिक विकास मानसिक विकास से ज्यादा होता है तो कभी कभी मानसिक विकास शारीरिक विकास से ज्यादा होता है। इसलिए बच्चों में असंतुलन बढ़ जाता है और उन्हें परेशानियों से गुजरना पड़ता है।

यदि बच्चों में एड्रीनल/अधिवृक्क ग्रंथी का विकास अधिक हो जाता है तो ऐसे बच्चे डरा डरा सा महसूस करते हैं। वे कठिन स्वभाव वाले व्यक्ति के पास नहीं रह सकते। उससे डरते हैं और वे ऐसे शिक्षक से पढ़ना नहीं चाहते या उसका विषय भी उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे ऐसे सभी टीचर्स से डरते हैं। अब यदि ऐसे बच्चों को सन्तुलित करना है तो उनकी एड्रीनल/अधिवृक्क ग्रंथी का स्त्राव ठीक करना आवश्यक है।

बच्चे की उम्र जब 6, 7 वर्ष की होती है तब पिनियल ग्रंथी की निकासी होती है और जैसे ही निकासी पूरी होती है तब बच्चे में संवेगात्मक विकास जल्दी शुरू हो जाता है, इसी वजह से उनमें सैक्स हार्मोन बढ़ना शुरू हो जाते हैं, और ऐसी स्थिति में वे असंतुलित होते हैं। अपने जीवन में कठिनाइयाँ महसूस करते हैं।

ऐसी स्थिति में यदि हम संवेगात्मक विकास में विलंब कर सकते हैं तो बच्चे में सन्तुलन आ सकता है। वह अच्छा व्यवहार करने लगता है। यह करने के लिए हमें पिनियल ग्रंथी को स्वस्थ रखना होगा। पिनियल ग्रंथी को स्वस्थ रखने के लिए योग में शम्भवी मुद्रा प्राणायाम अत्यन्त जरूरी है।

सम्भवी प्राणायाम अपने चक्र को प्रभावित करता है और यौन परिपक्वता को विलंबित करता है। इससे बच्चों को अत्यंत फायदा होता है।

इसलिए बच्चों के लिए योग आज के समाज में अत्यंत उपयोगी है, महत्वपूर्ण है। सरकार को और सामाजिक संस्थाओं को इसका महत्व समझते हुए योग को बढ़ावा देना चाहिए।

सम्भवी प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, शशांकासना, सिंहासना, मांजरी आसन, उष्ट्रासन, मछासना, सर्पासना, वृक्षासना, पर्वतासना, योग निद्रा, हास्य योग बच्चों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

मैंने विगत 25-30 सालों में बच्चों पर इसका प्रयोग किया है। आगरा में संत फेलिक्स, संत पॉल हिन्दी मीडियम, सेंट पीटर्स कॉलेज, और आगरा के बाहर अन्य

स्कूलों में भी इसका प्रयोग किया है। इससे बच्चों को अत्यंत लाभ हुआ है। इसी प्रयोग से जब मैं हाथरस में संत फ्रांसिस स्कूल में था तब करीब 35 बच्चे जो अन्य स्कूलों में फेल हुये थे, एक साथ मेरे पास बोर्डिंग में रखे गए थे। करीब 3-4 साल में ही उनमें बहुत परिवर्तन दिखायी दिया। सबके सब अच्छे मार्क से पास हुए और आज अच्छा जीवन बिता रहे हैं।

सेण्ट पीटर्स कालेज में इसी प्रयोग से बच्चे चाहे कितने ही नटखट क्यों न हों, लेकिन योग से और मनन चिन्तन से सबसे बड़ी परीक्षा भी मैं सफल हो जाते थे।

आशा करता हूँ कि एक दिन लोग योग के महत्व को समझेंगे और उसे आगे बढ़ाने में अपना जीवन समर्पण करेंगे।

फादर जॉन फरेरा, सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा

पृष्ठ 10 का शेष

हम जानते हैं कि स्वर्गदूत ईश्वर के सन्देशवाहक होते हैं और ईश्वर की आज्ञा के अनुसार ही स्वर्गदूत अपने शब्दों का भी चयन करते हैं। पिता परमेश्वर ने ही स्वर्गदूत गब्रिएल को माता मरियम को इन शब्दों से संबोधित करने की आज्ञा दी थी “धन्य है तू स्त्रियों में और धन्य तेरे गर्भ का फल येशु”- ये एलिजाबेथ के शब्द हैं। (लूकस 1:42)। स्वर्गदूत से सन्देश प्राप्त करने के बाद माता मरियम शीघ्रता से पहाड़ी प्रदेश में अपनी कुटुंबिनी एलिजाबेथ से मिलने जाती है। माता मरियम का अभिवादन सुनकर एलिजाबेथ यह कहती हैं। लूकस 1:41 से हमें यह भी मालूम पड़ता है कि यह बात एलिजाबेथ पवित्र आत्मा की प्रेरणा से कहती है।

इस प्रकार हमें यह मालूम होता है कि ‘प्रणाम मरिया’ प्रार्थना का पहला भाग ईशवचन ही है। माला विनती में हम बार-बार ईशवचन को दुहराते हैं। इस प्रकार ईशवचन को दुहराने से क्या होता है? लूकस 6:45 कहता है, “अच्छा मनुष्य अपने हृदय के अच्छे भण्डार से अच्छी

चीजें निकालता है और जो बुरा है, वह अपने बुरे भण्डार से बुरी चीजे निकालता है। स्तोत्र 119:11 में पवित्र वचन कहता है, “मैंने तेरी शिक्षा अपने हृदय में सुरक्षित रखी, जिससे मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।” इससे यह साफ है कि पवित्र वचन को बार-बार दुहराकर उस पर मनन चिन्तन करने से हम पाप से दूर हो जाते हैं।

प्रणाम मरिया प्रार्थना के दूसरे भाग में हम माता मरियम की मध्यस्थता की याचना करते हैं। माता मरियम की मध्यस्थता की शक्ति हमें काना के विवाह भोज (योहन 2:1-11) में देखने को मिलती है। माता मरियम के कहने पर ही प्रभु येशु अपना समय न आने पर भी पानी को अंगूरी में बदलकर अपना पहला चमत्कार करते हैं।

इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि माला विनती माता मरियम के साथ मिलकर प्रभु येशु के जीवन के रहस्यों पर ध्यान मनन की प्रार्थना है। यह पवित्र वचन पर आधारित प्रार्थना है। यह आध्यात्मिकता में बढ़ने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है।

शिक्षक ही समाज को दिशा दिखाता है:

डॉ. आल्बर्ट डिसूजा

सर्वधर्म प्रार्थना एवं शिक्षक सम्मान समारोह सम्पन्न



आगरा 5 सितम्बर। “शिक्षक ही समाज को उचित दिशा दिखाता है। शिक्षक की भूमिका व महत्व को कभी भी कम करके नहीं आंका जाना चाहिए”, शिक्षक दिवस के अवसर पर सेंट पीटर्स कॉलेज प्रेक्षागृह में आयोजित अन्तरधर्मीय प्रार्थना एवं सेवा निवृत्त शिक्षक, सम्मान समारोह के अवसर पर आर्चबिशप डॉ. आल्बर्ट डिसूजा लोगों को सम्बोधित कर रहे थे। समारोह का प्रारम्भ स्थानीय समन्वयक फादर मून लाजरस द्वारा स्वागत सम्बोधन के साथ हुआ। इसके बाद सद्भावना के अध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा, मुख्यातिथि डॉ. संजीव भारद्वाज (प्राचार्य, राजकीय कन्या महाविद्यालय, आवंलखेड़ा, आगरा), सद्भावना के निदेशक फादर वर्गीस कुन्त, स्थानीय समन्वयक फादर मून लाजरस, अध्यक्षा श्रीमती वत्सला प्रभाकर एवं कॉलेज के प्रधानाचार्य फादर पॉल थानिककल द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं मदर टेरेसा के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। राष्ट्रगीत

वन्देमातरम् गाया गया। तत्पश्चात फादर वर्गीस कुन्त के निर्देशन में अन्तरधर्मीय प्रार्थना सभा आयोजित की गई। इस अवसर पर सेंट विन्सेन्ट हाईस्कूल की छात्राओं ने एक प्रार्थना नृत्य प्रस्तुत किया। इसके बाद सभा के मुख्य अतिथियों का परिचय कराकर उनका स्वागत व सम्मान किया गया। समिति के सचिव डॉ. अजय बाबू ने विगत सभा की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर डॉ. बसन्त बहादुर सिंह (आर.बी. एस. कॉलेज, आगरा) ने डा. राधाकृष्णन के जीवन कृतित्व पर तथा श्रीमती सोमा जैन (कोर्डिनेटर, शिशु कल्याण विभाग, जसोरिया) ने संत मदर तेरेसा के जीवन दर्शन पर अपने विचार प्रकट किए। तत्पश्चात नगर के विभिन्न स्कूल-कालेजों से हाल ही में सेवा निवृत्त हुई पांच शिक्षिकाओं श्रीमती निर्मला आईलिन सिंह, सुश्री ललिता आहुजा, श्रीमती पुष्पलता बत्ता, श्रीमती किरन कॉलिन्स एवं श्रीमती नीलम मेहरोत्रा तथा दो शिक्षकों डॉ. रमेश चन्द्र शाक्या एवं श्री जॉन प्रदीप उलरिक को शाल ओढ़कर, प्रशस्ति पत्र एवं स्मारिका देकर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात सभा को विशिष्ट अतिथि, मुख्यातिथि एवं अध्यक्ष द्वारा सम्बोधित किया गया। डा. मधुरिमा शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। सभा का संचालन डा. एस.एस. चौहान ने किया। सभा के अन्त में कल्याण व्हीकल्स द्वारा आगरा शहर में हरित क्रान्ति हेतु सभी सदस्यों को एक-एक पौधा देकर उन्हें रोपने का अनुरोध किया गया।

समारोह में नगर की विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से प्रबुद्ध नागरिकों एवं धर्मप्रतिनिधियों ने भाग लिया। समारोह में श्री अनिल बंसल, समी आगाई, डा.

नसरीन बेगम, शीला बहल आदि ने भाग लिया।

क्रिश्चियन समाज सेवा सोसाइटी के अध्यक्ष श्री डेनिस सिल्वेरा ने सद्भावना समिति द्वारा समाज में शांति अमन बनाए रखने के लिए किए जाने वाले सभी प्रयासों की सराहना करते हुए भविष्य में भी इसी तरह के कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर दिया। —डॉ. अजय बाबू

संत अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय में

शिक्षक दिवस मनाया गया

5 सितम्बर को सेंट अल्फोंसा इंस्टीट्यूट फॉर स्पेशल एजुकेशन में 'टीचर्स डे' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि आदरणीय फादर जिप्सन पालाट्टी और हमारे स्कूल की प्रधानाध्यापिका आदरणीया सिस्टर शैली थे। स्कूल की छात्रा रेसिता ने फादर, सिस्टर और टीचर्स की आरती उताकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर स्कूल के अन्य छात्र-छात्राओं द्वारा फादर जिप्सन व सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को फूलों के गुलदस्ते भेंट कर सम्मानित किया गया। टीचर्स के सम्मान में छात्रों द्वारा सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। मुख्य अतिथि फादर जिप्सन ने सभी छात्रों को इस सुन्दर कार्यक्रम के लिए धन्यवाद दिया तथा उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

इसी कड़ी में 12 सितम्बर 2018 को सेंट अल्फोंसा इंस्टीट्यूट फॉर स्पेशल एजुकेशन में लॉयन्स क्लब विशाल (आगरा) द्वारा टीचिंग मेटेरियल प्रदान किया गया। इसके उपलक्ष्य में बच्चों द्वारा एक छोटा सा कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्कूल में आए लायन्स क्लब के सभी सदस्यों ने हमारे विशिष्ट बच्चों के कार्यक्रम की दिल से सराहना की व अपनी शुभकामनाएं दीं।

सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद में

शिक्षक दिवस आयोजित

5 सितम्बर 2018 को सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल,

फतेहाबाद में शिक्षक दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिमा पर फूल अर्पित कर किए गए, इसके उपरान्त बच्चों ने शिक्षकों का अभिवादन स्वागत गीत तथा स्वागत नृत्य से किया। अन्त में प्रधानाचार्य फादर डॉमिनक जॉर्ज ने शिक्षक दिवस के महत्व को समझाते हुए सभी शिक्षकों का सम्मान किया।

आगरा शहर के इण्टर कॉलेजों में एच.आई.वी. व एड्स पर जागरुकता कार्यक्रम आयोजित



आगरा। फातिमा हॉस्पिटल, आगरा में चल रहे प्रोग्राम एच.सी.डी.पी. के अन्तर्गत आगरा शहर में दिनांक 6 से 17 सितम्बर 2018 तक आठ इण्टर कॉलेजों जैसे आनन्द इण्टर कॉलेज, संत बुद्धराम, श्रीमती दुर्गा देवी, राजकमल इण्टर कॉलेज, नेताजी इण्टर कॉलेज व अन्य इण्टर कॉलेजों में एच.आई.वी. (एड्स) पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन प्रोजेक्ट इंचार्ज सिस्टर डेजी फ्रांसिस के नेतृत्व में हुआ। सोशल वर्क स्टाफ द्वारा एच.आई.वी./एड्स पर ऐनीमेशन मूवी दिखाई गई। स्रोतकर्ता श्रीमती मौली जोस ने इस कार्यक्रम के माध्यम से लगभग 740 छात्र व छात्राओं को इस बीमारी के बारे में विस्तार से समझाया व महत्वपूर्ण जानकारी दी। छात्र व छात्राओं ने उन्हें ध्यानपूर्वक सुना व सम्बन्धित प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शान्त की।

सिस्टर डेजी फ्रांसिस

फातिमा हास्पिटल, आगरा

सेंट पैट्रिक्स पल्ली में महिला दिवस का आयोजन

9 सितम्बर 2018 को संत पैट्रिक्स पल्ली में महिला एवं बालिका दिवस बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इसमें मिस पैन्सी थॉमस ने भाग लेकर समस्त महिलाओं का उत्साहवर्धन किया। मिस्सा की शुरुआत एक जुलूस के साथ की गई। श्रीमती निशा लॉरेन्स द्वारा एक सुंदर प्रस्तावना प्रस्तुत की गई। जिसके पश्चात समस्त पुरोहितगण ने महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए मिस्सा चढ़ाया। श्रद्धेय फादर डेनिस ने बड़े ही संक्षिप्त शब्दों में महिलाओं की महत्ता और कर्तव्यों का वर्णन करते हुए चर्च में महिलाओं की सहभागिता पर बल दिया।

मिस्सा के बाद महिलाओं के लिए बाईबिल प्रतियोगिता एवं बालिकाओं के लिए संगीत प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। पल्ली पुरोहित फादर जॉन फरेरा ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया एवं सभी महिलाओं से अपने घरों में दैनिक प्रार्थना व रोज़री पढ़ने पर विशेष ध्यान देने का अनुरोध किया।

श्रीमती डिम्पल मैसी, आगरा

सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद में हिन्दी सप्ताह मनाया



14 सितम्बर। सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, भरापुर, फतेहाबाद में हिन्दी सप्ताह मनाया गया। विद्यालय में सुलेख, हिन्दी भाषण और थम्ब पेटींग प्रतियोगिताओं के आयोजन किये गये। कक्षा एल.के.जी. से 4 तक के बच्चों ने हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत होने वाले कार्यक्रमों में

भाग लिया। छात्रों ने कविता पाठ, शिक्षा का महत्व तथा जीवन में वृक्षों का महत्व जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये। हैड मिस्ट्रेस सिस्टर ज्योति ने प्रतियोगिता के आयोजकों तथा विजयी छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएँ एवं बधाई दीं। फादर डॉमिनक जॉर्ज ने बच्चों को हिन्दी भाषा के शुद्ध ज्ञान एवं उच्चारण पर सदैव बल देने के लिए प्रेरित किया।

संत जूड पल्ली, कौलक्खा में पुरोहित निवास स्थान की आधारशिला रखी गई



23 सितम्बर 2018 का दिन संत जूड पल्ली, कौलक्खा के लिए बड़े हर्षोल्लास का दिन था, क्योंकि इस दिन आगरा महाधर्मप्रांत के धर्माध्यक्ष माननीय डॉ. आल्बर्ट डिसूजा के हाथों पुरोहितों के निवास स्थान की नींव रखी गई। इस कार्य के लिए हमारे पल्ली पुरोहित फादर शीजु ने अथक प्रयास किया। फादर जॉर्ज पॉल, फादर स्टीफन, फादर सेबास्टियन, फादर आलोक, फादर मून, फादर डेनिस, फादर जोबी तथा संत जूड पल्ली के समस्त वासियों की उपस्थिति में स्वामी जी, फादर डेनिस, फादर शीजु, सिस्टर वल्सा, कॉन्ट्रेक्टर एल्फिन, पेरिश काउंसिल मेम्बर मोसेस तथा पल्ली के एक छोटे बालक केनिथ के द्वारा नींव का पत्थर रखा गया। नींव में टाइम कैप्सूल, रोजरी माला, स्केप्लर आदि स्वामी जी ने रखे। धर्मग्रंथ से पवित्र पाठ पढ़ा गया, स्वामी जी के द्वारा प्रवचन दिया गया। स्वामी जी ने कहा, कि 'संत जूड पल्ली में पुरोहित

निवास स्थान की अत्यधिक आवश्यकता है, कभी जब मैं थका आता हूँ तो मुझे भी विश्राम के लिए स्थान मिल सकता है।' शीघ्र ही पुरोहित निवास का निर्माण सम्पन्न हो सके, इस उम्मीद के साथ अंत करती हूँ।

अंजलीना मोसेस, संत जूड पल्ली, आगरा



इस अवसर पर अतिथि पुरोहित फादर डेनिस डिसूजा तथा पल्ली पुरोहित फादर शीजु ने सभी महिलाओं के लिए प्रार्थना कर, विशेष मिस्सा बलिदान अर्पित किया। फादर शीजु ने अपने प्रवचन में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के बारे में चिंतन किया, उन्होंने महिला जाति के लिए विशेष प्रार्थना की। महिलाओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया और आशीष दी।

अंजलीना मोसेस, कौलक्खा, आगरा

आगरा क्षेत्रीय काथलिक परिषद की बैठक

आगरा क्षेत्रीय काथलिक परिषद की वार्षिक बैठक दिनांक 20-22 सितम्बर 2018 को आगरा महाधर्मप्रांत के पास्टरल सेंटर में सम्पन्न हुई। इसमें उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड और राजस्थान क्षेत्र के 5 धर्माध्यक्ष, 10 पुरोहितों, 4 धर्मबहनों और 57 लोकधर्मियों ने भाग लिया।

संगोष्ठी का मुख्य विषय था 'वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक परिवेश में ईसाई प्रत्युत्तर और लोकधर्मी नेतृत्व में हमारी अनुक्रिया।' इस विषय पर प्रकाश डालने के लिए गोष्ठी के मुख्य वक्ता डा. डेंज़िल गोडिन (एम. एल.ए.) एवं श्री छोटे भाई ने इससे जुड़ी समस्याओं को उजागर किया और इसके निवारण के लिए सुझाव भी दिये। सभी धर्मप्रांतों ने समूह में विचार विमर्श करके एक कार्य योजना तैयार की गई।

अंतिम सत्र में ए आर सी सी के अध्यक्ष महाधर्माध्यक्ष मान्यवर आल्बर्ट डिसूजा ने सभी का आधार व्यक्त किया और यह आशा जताई कि यह सभी सुझाव एवं निर्णय सभी धर्मप्रांतों में क्रियान्वित करेंगे।

श्वेता डिक्रूज़, बरेली

संत जूड पल्ली में महिला दिवस तथा बालिका दिवस का आयोजन किया गया

संत जूड पल्ली, कौलक्खा में 23 सितंबर रविवार को महिला तथा बालिका दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम सभी बालिकाओं, किशोरियों, महिलाओं तथा वृद्ध स्त्रियों ने बड़े उल्लास के साथ मोमबत्तियां लेकर पंक्तियों में चर्च के भीतर प्रवेश किया।

सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी की हिन्दी शिक्षिका गनी मैडम के घर में आग से भयंकर नुकसान

आगरा 27 सितम्बर। उखर्रा रोड स्थित संजय नगर में बुधवार सुबह नौ बजे सेवानिवृत्त शिक्षिका श्रीमती गनी के घर में आग लग गई। पड़ोसियों ने आग पर काबू पाया। आग में लगभग चार लाख का सामान जलकर राख हो गया। बुधवार सुबह शिक्षिका सेमीनेरी में पढ़ने आई हुई थीं। तभी आग लग गई। धुआं निकलता देख लोग जुट गए। लोगों ने आग बुझाई। जानकारी पर मैडम आ गई। उनका कहना था कि अग्निकांड में काफी सामान जल गया। आग लगने का कारण शार्ट सर्किट होने की आशंका है।

Rt. Rev. P.P. Habil Felicitated on the 5th Anniversary of His Consecration

Agra, Sept. 29, 2018: Rt. Rev. P. P. Habil, (Bishop of Agra Diocese-CNI), celebrated the

fifth anniversary of his Episcopal Ordination. A special Thanksgiving Service was organized on September 29th, 2018 at St. George's Cathedral, Agra. The Agra Diocese Church of North India (CNI) consists of the whole of Western U.P., Uttarakhand etc. Previously it was a part of the Diocese of Lucknow. There are about two dozen Presbyters (Pastors) working in Agra Diocese.

Rev. Fr. Sebastian Pantaladi, Fr. Eugene Moon Lazarus and Fr. Lawrence Raja felicitated His Lordship in his Curia Office and wished him well. Rev. Fr. Eugene Moon Lazarus, Secretary, Agra Clergy Fellowship, participated in the ceremony and wished Bishop Habil on behalf of the Archbishop and the Archdiocese of Agra.

आरोग्यदायिनी स्वास्थ्य की माता वेलांकनी के वार्षिक समारोह में विशेष प्रार्थनाएं सम्पन्न

आगरा। रोमन कैथोलिक समाज ने रविवार 30 सितम्बर को आरोग्यदायिनी स्वास्थ्य की माता वेलांकनी की प्रतिमा स्थापना की तेरहवीं वर्षगांठ भक्ति और उल्लास से मनायी। श्रीमती आइलिन नाडर के प्रार्थनालय भवन 195-ए, वैस्ट अर्जुन नगर, आगरा पर विशेष प्रार्थना सभा एवं रोजरी माला विनती की गयी, भजन गायन भी हुआ। इसमें सेंट पैट्रिक चर्च के पल्ली पुरोहित फादर जॉन फरेरा, सहायक पल्ली पुरोहित फादर राजनदास, कनोसा धर्मसमाज की धर्मबहनों के अलावा बड़ी संख्या में विश्वासीजनों ने भाग लिया।

“माँ का हम सबके जीवन में एक विशेष स्थान होता है। माँ हमें सदाचरण का पालन करने और धर्म का मार्ग अपनाने को प्रेरित करती है।” माता मरियम के सम्मान में आयोजित प्रार्थना सभा में विश्वासियों को फादर राजनदास ने सम्बोधित किया।

श्री डेनिस सिल्वेरा ने बताया कि श्रीमती आइलिन नाडर के प्रार्थनालय भवन पर वेलांकनी माता की मूर्ति

स्थापना की तेरहवीं वर्षगांठ के अवसर पर रखी गयी इस विशेष माला विनती समारोह एवं प्रार्थना सभा में नगर के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग सौ लोगों ने भाग लिया। प्रार्थना सभा के दौरान हाथों में जलती मोमबत्तियां लेकर माला जपते एवं भजन गाते हुए भक्तों ने समाज व देश में शांति, एकता और भाइचारे की मन्नतें मांगी।

श्रीमती मारग्रेट नाडर एव श्री ओबरी नाडर ने बताया कि विगत लगभग चार सौ वर्ष पूर्व मद्रास के वेलांकनी गांव में माता मरियम ने दर्शन देते हुए अनेक लोगों को असाध्य रोगों से मुक्ति दिलायी थी। तभी से वह स्थान तीर्थस्थल के रूप में जाना जाता है। जो विश्वासी वहां नहीं जा पाते हैं उनके लिए यहीं पर प्रार्थना सभा एवं शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है। - डेनिस सिल्वेरा

New Building of St. Thomas' School, Agra blessed



24th September 2018 was another milestone in the history of St. Thomas' School, Shastripuram, Agra. The new building was blessed and inaugurated by His Grace Most Rev Dr. Albert D' Souza. His Grace in his speech talked about the holistic growth in the field of Education. He highlighted the importance of having an Education that combines mind, heart and hand. The teaching is not limited to growth in knowledge but being tangible in action. He also stressed upon the significance of discipline as call of the time. He put forth a call to aspire bigger

and fly higher.

The ceremony began with a short prayer service followed by the blessing of the building. The students and the teachers actively participated in the celebration.

Rev. Fr. George Paul, Fr. Sebastian Pathalady and many Priests and Religious Sisters joined in this gracious inaugural ceremony. Fr. Paul Thannickal, the new Manager was officially welcomed into the family of St. Thomas School.

The students welcomed His Grace and the other dignitaries with floral bouquets. Rev. Fr. Arun Lasrado expressed his deep gratitude to God Almighty. He thanked His Grace for the support that he received from him in making this dream come true. He also felicitated the people concerned who worked on this project.

The tiny shoot which began in the year 2014 is now growing into a beautiful tree, spreading out its branches in every field. The values and the ethics that are instilled in the students may enhance them to bear witness in the world.

Long Live Thomasine.....

Sr. Francina FC, Shastripuram, Agra

नुक्कड़ नाटक द्वारा स्वच्छता का संदेश



2 अक्टूबर मंगलवार। सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद की ओर से गाँधी एवं शास्त्री जयन्ती के अवसर पर फतेहाबाद पुलिस चौकी से शांति मार्च का आयोजन किया गया। शांति मार्च को थानाध्यक्ष फतेहाबाद ने हरी

झंडी दिखा कर रवाना किया। शांति मार्च का प्रथम पड़ाव अम्बेडकर चौक था, जहाँ प्रधानाचार्य, शिक्षकवृंद, फतेहाबाद डैवलपिंग ग्रुप तथा छात्र वर्ग द्वारा सफाई की गई। शांति मार्च के द्वितीय पड़ाव गाँधी चौक पर गाँधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया तथा गाँधी जी एवं शास्त्री जी के जीवन की कुछ मुख्य गतिविधियों पर आधारित नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जनता को अपने महापुरुषों के आदर्शों पर चलने, अपने जनपद एवं देश को स्वच्छ रखने का संदेश बच्चों द्वारा दिया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य फादर डॉमिनक जॉर्ज ने फतेहाबाद के लोगों से अनुरोध करते हुए कहा, कि “हम सभी को अपने बच्चों के सुंदर, सुखद और सुखमय भविष्य के लिए अपने एक कदम स्वच्छता की ओर के स्थान पर, हर कदम को स्वच्छता की ओर बढ़ाना होगा।” शांति मार्च को सकुशल सम्पन्न कराने में फतेहाबाद डैवलपिंग ग्रुप का विशेष सहयोग रहा तथा गाँधी चौक व यमुना गली में ग्रुप द्वारा बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु फल व जूस वितरित किया गया।

National Day of Prayer for India Observed



Agra, October 2nd: Under the banner of the United Christian Prayer for India (UCPI), Mahatma Gandhi and Lal Bahadur Shastri Jayanti was observed as a National Day of Prayer for our beloved country at Havelock Methodist Church, Agra Cantt. A sizeable number of Priests/Pastors and lay faithful participated in the programme and prayed for the cause.

The programme began with a welcome note by Rev. T.S. Gill, Presbyterian in-charge of Havelock Methodist Church, Agra. Then the Church choir sang a suitable hymn. Dr. Raju Thomas, State Coordinator for UCPI, explained the purpose of our meeting. Mr. Praveen Mishra, Founder and President of Masih Jan Kalyan Samiti did the Scripture reading. It was followed by the exhortation and reflection given by Rev. Fr. Eugene Moon Lazarus. He talked on 1 Tim 2:1-4. Mrs. Elisha sang a special song. Various Intercessory prayers were offered for our country, our President, Prime Minister, Governor, Chief Minister and all political leaders, Bureaucrats, National and Regional, leaders and officers, for peace, harmony and brotherhood in our society. Once again, the choir sang a melodious song 'Itni Shakti Hamen Dena Data....'. Fr Eugene Moon Lazarus gave the final Benediction. With this, the programme came to an end. Refreshments were served to all.

Alfred Rosemeyer
St. Mary's Church, Agra Cantt

At last, Poor Clares Arrived in Agra



Agra, October 4th: This will be a red letter day in the annals of the Archdiocese of Agra, when, after much waiting and expectation, the Religious of POOR CLARES (Cloistered Congregation) finally arrived. It seemed all the

roads were leading to Etmadpur, Agra, where within walls 18 metres high, a new convent was built to accommodate the Sisters of POOR CLARES.

'Aaradhana', the new monastery of POOR CLARES was inaugurated on the feast of St. Francis of Assisi. Most Rev. Albert D'Souza and Most Rev. Francis Kalist graced the occasion. His Grace asked Rev. Sr. Victoria, the Abbess of the Dumka community of POOR CLARES, to cut the ribbon of the newly built convent. The ceremonial lamp was lit by the dignitaries. His Grace handed over the keys of the convent to Rev. Sr. Victoria, who, in turn, passed them on to Rev. Sr. Antonia Murmu, Abbess of 'Aaradhana' Monastery. The doors will remain closed till the corpse of any inmate has to be taken for burial outside. Another door will be used for shopping, travelling etc.

The Holy Eucharist was offered in the new chapel. Besides both Bishops, Rev. Fr. Lourdu SJ from Dumka, and many priests from the Archdiocese concelebrated the Mass. A good number of Religious Sisters also participated in the Mass. Bishop Francis Kalist of Meerut Diocese, preached a lovely homily, to mark the occasion. After Mass, the congregation visited the house for the first and last time, as it would be closed for the ordinary public, except the parlour, where visitors and guests/benefactors will be attended to.

The Archbishop has requested Rev. Fr. Stany of Bareilly, Minister at Masih Vidyapeeth, Etmadpur, Agra, to help the Sisters initially. At present, there are six Sisters in the 'Aaradhana' community, namely, Sr. Antonia Murmu (acting Abbess), Sr. Genevieve, Sr. Monica, Sr. Brigita and two juniors, Sister Stella and Regina.

In an interview with Rev. Sr. Victoria, the

Abbess, to the Editor of Agradiance, she said that 'Aaradhana' in Agra, is their fifth community in the country. Their Sisters came originally from Burma to Aluva, Kerala. From there, they went to Otacamund (Ooty) and Hyderabad, and from Ooty to Dumka, and finally to Agra. Sr. Victoria will continue to be the Abbess of Dumka and Agra communities, until Canonical erection of Sr. Antonia. Dumka is known as the 'First Daughter House', whereas Raiganj is the 'Second Daughter House'.

Their main apostolate is prayer for all. Simultaneously, the Sisters make hosts and other liturgical dresses (on request). They chiefly depend on their manual work and home-grown fruits and vegetables. They do not go out in search of food etc., but providentially benefactors supply them their needs from time to time.

To keep in touch with the outside world, they make use of the newspapers and television (only for news) and other necessary information. After two years of Novitiate, they make their First Profession, and after six years of Juniorate, they make their Final Profession. Their family members are allowed to attend the Profession ceremonies. In turn, the Sisters also can visit home to see their ailing/dying parents, at least twice in their life time. Surprisingly, POOR CLARES are also facing an acute problem with vocations, as this kind of life does not challenge nor attract the young people any more.

The Archdiocese extends a warm welcome to you dear Sisters of POOR CLARES! May the Lord of vocations help you and support you always. Have a pleasant stay with us and most importantly, continue to pray for us. May God bless you always!

Fr. Eugene Moon Lazarus
St. Lawrence Seminary, Agra

सेंट थॉमस चर्च, सिकन्दरा में माला विनती का पर्व अद्भुत रीति से मनाया गया



आगरा 7 अक्टूबर। संत थॉमस सिकन्दरा पल्ली के युवाओं ने जगत जननी माँ मरियम के आदर में अपनी भक्ति, प्यार व विश्वास को कुछ इस प्रकार प्रकट किया कि पल्लीवासियों के हृदयों में हर्ष व भक्ति की लहर दौड़ पड़ी।

पल्ली पुरोहित फादर अरूण लसरादो के सहयोग व मार्गदर्शन में प्रातः छः बजे से युवा समूह के सदस्य संत फ्रांसिस स्कूल में एकत्र हुए और उन्होंने गैस के गुब्बारों को जोड़कर पवित्र रोजरी (माला) बनाई व उसमें चमकता सुनहरा क्रॉस लगाकर रोजरी पढ़ते जुलूस में चल रहे पल्लीवासियों के मध्य अचानक चमत्कारिक रोजरी ले आये। भक्तिभाव से परिपूर्ण युवाओं ने रोजरी को थामा जिसका क्रॉस फादर अरूण के हाथ में था। बड़े भक्तिभाव से रोजरी को आसमान की ओर छोड़ा गया। जब रोजरी गोलाकार रूप में ऊपर उड़ने लगी तब फादर के हाथों से क्रॉस छोड़ा गया। बड़ा ही सुन्दर नजारा था। ऊँचे आसमान की ओर पल्लीवासियों व युवाओं की मनोकामनाओं के साथ लिए रोजरी ऊपरी बढ़ती रही और न जाने कहाँ अलोप हो गई। शायद स्वर्ग में माँ मरियम के सिंहासन के पास विराजमान हो गई है!

सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा के बच्चों एवं युवाओं की सरधना तीर्थयात्रा सम्पन्न

आगरा 6-7 अक्टूबर। सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा

छावनी के धर्मशिक्षा पढ़ने वाले बच्चों, पल्ली के युवाओं के तथा पल्ली परिषद के सदस्यों के लिए रविवार 7 अक्टूबर आशीष भरा दिन रहा। पल्ली सहायक पुरोहित फादर राजनदास एवं फादर मून लाज़रस के नेतृत्व में पल्ली के करीब 50 बच्चों ने कृपाओं की माता के विश्व प्रसिद्ध तीर्थस्थल सरधना की तीर्थयात्रा में भाग लिया।



6 अक्टूबर की रात्रि करीब 9 बजे पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर जॉन फरेरा द्वारा की गयी प्रार्थना एवं भजन

द्वारा तीर्थयात्रा प्रारम्भ हुई। हमारी यह यात्रा बस द्वारा प्रातः लगभग 5 बजे कृपाओं की माता के तीर्थ, सरधना पहुंची।

प्रातः सभी ने बड़े भक्तिभाव से क्रूस के मार्ग में भाग लिया। क्रूस पथ के रहस्यों को फादर मून लाज़रस बड़ी सरलता से हमें समझाया। तत्पश्चात लगभग सभी विश्वासियों ने पाप स्वीकार करके पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लिया। उसके बाद हमने कृपाओं की माता के दर्शन किए एवं अपनी मन्नतें उनके सामनी रखीं।

दोपहर के भोज के बाद हम सभी अपने घरों की ओर लौट चले और रात करीब साढ़े नौ बजे अपने चर्च पहुंच गए। फादर राजन और फादर मून का बहुत-बहुत धन्यवाद।

लॉरेन्स मसीह

सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा

Who are our Guardian Angels?

No evil shall befall you, nor shall affliction come near your tent, for to His Angels God has given command about you, that they guard you in all your ways. Upon their hands they will bear you up, lest you dash your foot against a stone.



He has charged His angels with the ministry of watching and safeguarding every one of His creatures that behold not His face. Kingdoms have their angels assigned to them, and men have their angels; these latter it is to whom religion

Psalm 91: 10-12 A heavenly spirit assigned by God to watch over each of us during our lives. The doctrine of angels is part of the Church's tradition. The role of the guardian angel is both to guide us to good thoughts, works and words, and to preserve us from evil. Since the 17th century the Church has celebrated a feast honoring them in October throughout the Universal Church. Since the last calendar revision this feast is Oct 2.

designates the Holy Guardian Angels. Our Lord says in the Gospel, "Beware lest ye scandalize any of these little ones, for their angels in heaven see the face of My Father." The existence of Guardian Angels, is, hence a dogma of the Christian faith: this being so, what ought not our respect be for that sure and holy intelligence that is ever present at our side; and how great our solicitude be, lest, by any act of ours, we offend those eyes which are ever bent upon us in all our ways!

Archdiocese At A Glance

किशोरी दिवस समारोह का आयोजन



आगरा कैथोलिक डायोसिस समाज सेवा संस्था के माध्यम से सखी परियोजना, मथुरा द्वारा 8 सितम्बर 2018 को रावल गाँव में किशोरी दिवस का आयोजन किया गया। इसी तरह महिला सशक्तिकरण परियोजनाएं बरौली अहीर, आगरा के माध्यम से 9 सितम्बर 2018 को किशोरी दिवस का आयोजन सेन्ट क्लेयर्स स्कूल, यूनिट-2 उर्खरा रोड, बरौली अहीर ब्लॉक, आगरा में किया गया। इनमें कुल 865 किशोरियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था निदेशक फादर शिबू कुरियाकोस ने की। मुख्य अतिथि श्रीमती उपमा पाण्डेय (एस०डी०एम०, मथुरा) व श्रीमान आर०के० चौधरी (बाल विकास अधिकारी, आगरा) व विशिष्ट अतिथि फादर शीजू (प्रधानाचार्य, सेन्ट क्लेयर्स स्कूल, कोलकत्ता), फादर जोबी (रेक्टर, सेन्ट लॉरेन्स सेमीनेरी, आगरा), फादर वर्गीस (निदेशक, सद्भावना, आगरा), फादर इग्नेशियस मिराण्डा, पल्ली पुरोहित, कथीड्रल चर्च, आगरा), फादर जोसफ डॉबरे, सिस्टर देवदिता और फ्रांसिस काका (विदेश मंत्रालय) रहे।

इस अवसर पर 'महिला बिना समाज अधूरा' के माध्यम से एक महिला (लड़की) को अपने जन्म से मरण

तक किन-किन समस्याओं से गुजरना पड़ता है जैसे भ्रूणहत्या, शिक्षा का अभाव, घरेलू हिंसा, बलात्कार, दहेज, वृद्धावस्था पर जागरूकता आदि नाटकों की प्रस्तुति की गई तथा सामूहिक नृत्य एवं अतिथियों के प्रेरणादायक शब्दों द्वारा किशोरियों को प्रेरित एवं जागरूक किया गया।

मुख्य अतिथि श्रीमती उपमा पाण्डेय ने किशोरियों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करते हुए कहा कि "एक पढ़ी लिखी लड़की पूरे परिवार को पढ़ा देती है पर एक पढ़ा लिखा लड़का सिर्फ खुद ही पढ़ता है। इसलिए किशोरी शिक्षा जरूरी है।"

मुख्य अतिथि श्री आर०के० चौधरी ने किशोरियों को प्रोत्साहित कर कहा, कि "किशोरियों को बेहतर स्वास्थ्य के साथ-साथ शिक्षा की अति आवश्यकता है क्योंकि जैसे-जैसे किशोरियों शिक्षा पाती हैं। वैसा ही वे सम्मान पाती हैं।" उन्होंने सभी किशोरियों को बेहतर स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति जागरूक किया और उन्हें शपथ दिलाई।

संस्था निदेशक फादर शिबू कुरियाकोस ने कहा कि "कन्या भ्रूण हत्या एक कानूनी अपराध है जो हमारे समाज में हो रहा है पर वो ये नहीं जानते कि अगर कन्याओं को हम इस तरह धरती पर नहीं आने देंगे तो आगे का वंश कैसे चलायेंगे?"

विशिष्ट अतिथि फादर वर्गीस ने किशोरी सशक्तीकरण पर जोर देते हुए कहा कि "शिक्षा ही महिला का आभूषण है। एक पढ़ी लिखी नारी ही परिवार का भविष्य बदल सकती है इसलिए प्रत्येक किशोरी का शिक्षित होना जरूरी है।"

सिस्टर रेखा, सिस्टर वेरोनिका, यशपाल सिंह, हमीर सिंह एवं परियोजना जनसेविकाओं ने कार्यक्रम की तैयारियाँ कीं एवं कार्यक्रम को सफल बनाया। रमन कुमार, अशोक, रंजीत, ब्रज मोहन, निशान्त एवं समस्त महिला सशक्तिकरण परियोजना स्टाफ का सहयोग सराहनीय रहा।

International Girl Child Day Celebrated

St. John's Church, Firozabad, celebrated the International Girl Child Day on September 9th, to commemorate that the Girl Child is a gift and power of the Catholic Church.

Girl children of the parish were offered on the altar with roses as a symbol to replicate that they are the great asset to the Church. Special prayers were offered during the Eucharistic celebration. At the end of the holy Mass, the girl children were given gifts by the Mother General of the Canossian Sisters, who witnessed the Event.

– Priya Joseph, Firozabad

होली फैमिली चर्च, टूण्डला में कन्या दिवस मनाया गया

होली फैमिली चर्च, टूण्डला में रविवार 9 सितम्बर को बालिका दिवस बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। इस पवित्र दिन को माता मरियम के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन प्रत्येक बालिका को समर्पित है। इस दिन मुख्य याजक के रूप में हमारे बीच फादर दिलीप उपस्थित थे। मिस्सा बलिदान श्रद्धेय फादर एण्ड्रयू कोरिया, फादर संतीश तथा फादर दिलीप द्वारा चढ़ाया गया। सर्वप्रथम श्रीमती ब्रिजिट द्वारा श्रद्धेय फादर एण्ड्रयू कोरिया, फादर संतीश, फादर दिलीप व बालिकाओं की आरती उतारी गई। प्रत्येक कन्या को एक मोमबत्ती प्रदान की गई, जिन्हें जलाकर पवित्र वेदी तक एक जुलूस निकाला गया, माता मरियम के चरणों में सभी दीपों को प्रज्ज्वलित किया गया। दो बालिकाओं; रीता व अंकिता मिंज द्वारा पवित्र बाईबिल से क्रमशः पहला व दूसरा पाठ पढ़ा गया।

फादर दिलीप ने अपने प्रवचन में कहा कि “माता मरियम हमें ईश्वर से जोड़ने की एक कड़ी है। माता मरियम का व्यक्तित्व दयालुता, शालीनता, परोपकार, कृपालुता आदि गुणों से परिपूर्ण हैं। हमें भी इन गुणों को

अपने अन्दर समाहित करना चाहिए। मरियम शास्त्र में हम चार सिद्धान्तों को पढ़ते हैं कि (1) वह ईश माता है (2) निष्कलंक माता है (आदि पाप से मुक्त है)। (3) आजीवन कुंवारी है। (4) वह स्वर्गारोहित है।”

हमारे चर्च में इन बालिकाओं का सम्मान व आदर माता मरियम के प्रति हमारे प्रेम को दर्शाता है। बच्चों का हृदय भी पाप मुक्त होता है। हमारे समाज में स्त्रियों का आदर, प्रेम व सम्मान होना चाहिए। उनको समाज में बराबर का अधिकार व गरिमा प्राप्त होनी चाहिए। तत्पश्चात श्रीमती दीपा विलियम, ब्रिजिट दास, गीता, रुचिका, वण्डरवार्ट तथा क्रिस्टिना विलियम के द्वारा निवेदन प्रार्थनाएं पढ़ी गईं।

मिस्सा के बाद बालिकाओं को उपहार भेंट किए गए जिसका प्रबंध श्रीमती मरियम व श्रीमती कुसुम जोसफ द्वारा किया गया था। तत्पश्चात सनी विलियम द्वारा जलपान की व्यवस्था की गई।

क्रिस्टीना विलियम, होली फैमिली चर्च, टूण्डला

Silver Jubilee Celebration of Sr. Maria Goretti Lakra in Firozabad



On September 16th, 2018, the parishioners of St. John's Church, Firozabad, organized a magnificent Silver Jubilee celebration in honour of Rev. Sr. Maria Goretti (Canossian). The function was held to commemorate the completion of 25 glorious years of her services in the vineyard of the Lord.

On this great day, a solemn Mass was celebrated. The main celebrant was Most Rev.

Albert D'Souza, our Archbishop. In his sermon, His Grace numbered 25 years of Sr. Goretti's successful stories and the dedicated services she had rendered to the society and to the people of God, in particular.

After Mass, a felicitation programme was arranged to mark this great day. The parishioners' efforts and hard work were noticed by the Dances exhibited by the youth and children of the parish. Sr. Goretti was also honoured with a memento by the Parish Priest, Rev. Fr. Shaji Joseph.

Finally, a delicious dinner was served to all, thereby bringing to an end, a meaningful celebration.

Arul Anand, St. John's Church, Firozabad

**संत मिखाएल चर्च, अनूपनगर, मथुरा का पर्व
समारोह सम्पन्न, स्कूल की नई इमारत की आशिष**



30 सितम्बर 2018 को संत मिखाएल चर्च, अनूपनगर का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस पवित्र पर्व की तैयारी के लिए नौ रोजी प्रार्थना और 27 से 29 तारीख तक तीन दिनों की विशेष त्रिदुम प्रार्थना भी रखी गयी, जिसकी अगुवाई श्रद्धेय फादर राजनदास, फादर लॉरेन्स और फादर जोसफ रोड्रिगज ने की।

पावन पर्व के दिन चर्च से एक जुलूस गांव के मध्य

से होते हुए निकाला गया। जुलूस में गांव तथा बाहर से आए हुए सभी विश्वासियों ने भाग लिया। जुलूस के समापन के बाद स्कूल के लिए बनी नई इमारत की आशीष महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा द्वारा की गयी। इस अवसर पर फादर सेबास्टियन, फादर मैथ्यू तुण्डील, फादर सेबास्टियन के. फादर पीटर, फादर शिजु और अन्य फादर भी उपस्थित थे।

आर्चबिशप ने लगभग 25 पुरोहितों के साथ पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। बिशप स्वामी द्वारा पल्ली के पांच बच्चों को पहला परमप्रसाद और अन्य पाँच को दृढ़ीकरण संस्कार दिया गया। उन्होंने अपने प्रवचन में सभी को सुसमाचार के आदर्शों पर चलने के लिए बताया। हमारा सौभाग्य रहा कि इस अवसर पर फादर लूई, सिस्टर ऑफ पूअर क्लेअर्स और अपने पुरोहिताभिषेक की रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुके फादर मून लाजरस हमारे विशेष अतिथियों के रूप में हमारे साथ उपस्थित थे।

इस अवसर पर चर्च को फूलों व रंगबिरंगी लाइटों से सजाया गया था। इस पर्व को सफलतापूर्वक मनाने में सभी पल्लीवासियों व एफ सी सी धर्मसमाज की सिस्टर, ब्रदर विन्सेंट और युवाओं का भी बड़ा योगदान रहा। गांव तथा बाहर से आये फादर्स, सिस्टर और लोगों के लिए प्रीतिभोज का आयोजन गांव के लोगों ने ही मिल कर किया।

—फादर रोशन डिसिल्वा

**बस्तर पल्ली में बालिकाओं एवं
माताओं का दिवस मनाया**



2 सितम्बर 2018 को बस्तर पल्ली में बालिकाओं एवं माताओं का दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मिस्सा बलिदान से पूर्व सभी बालिकाएँ एवं माताएं जुलूस में आईं और पूर्ण भक्ति के साथ गिरजाघर में प्रवेश किया। इस दिन हमारी पल्ली के बच्चों ने मिस्सा बलिदान में गीतो का संचालन किया।

जुलुस के पश्चात प्रस्तावना पढ़ी गयी, जिसमें सभी को अपनी माताओं और बहनों का आदर व सम्मान करने के लिए प्रेरित किया। मिस्सा बलिदान में मुख्य याजक फादर जूड एन्थनी व सहायक याजक फादर शिजू जोसफ पिण्डी थे। फादर जूड ने प्रवचन के द्वारा सभी माताओं को संत मोनिका के पद चिन्हों पर चलने की सीख दी। संत मोनिका ने 17 साल तक अपने बेटे अगस्टीन के मन परिवर्तन के लिए प्रार्थना की, जिसके फलस्वरूप अगस्टीन एक नेक हृदय वाले इंसान बन गये। साथ ही साथ फादर जी ने माता मरियम की तरह एक पवित्र जीवन जीने के लिए उत्साहित किया। फादर जी ने बालिकाओं को समाज में महत्वपूर्ण स्थान देने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया तथा बालिकाओं के प्रति गलत धारणाओं को परिवर्तित करने का संदेश दिया। साथ ही फादर ने सभी माता पिताओं को बालिकाओं के प्रति सवेदनशील रहने के लिए प्रेरित किया और घर तथा समाज में लड़कों के बराबर का दर्जा देने को कहा। मिस्सा बलिदान के बाद फादर जी ने बालिकाओं एवं माताओं के लिए विशेष प्रार्थना की तथा उनके सर पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया। इसके उपरान्त फादर जी ने सभी माताओं और बालिकाओं को रोज़री माला वितरित की और उन्हें माता मरियम से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया।

ब्रदर सम्मा, रोज़री चर्च, बस्तर

Gandhi Jayanti Celebration Report at Jesus & Mary Convent School, G. Noida



Jesus & Mary Convent School, Gr. Noida celebrated the birth anniversary of the Father of Nation with great zeal and alacrity. The school started with a colorful assembly conducted by the students. The school Principal Rev. Fr. Rogimon Thomas lit the lamp with Manager. Rev. Fr. K.K. Thomas, former Principal. Rev. Fr. Sebastian, Vice-Principal, Rev. Sr. Rubina and Pre-Primary Incharge Rev. Sr. Sophia, and paid homage to Mahatma Gandhi. The students presented different songs and a skits. The assembly concluded with the release of the first school Magazine 'Invictus'. Later on, different art and craft activities were conducted in the class. Some students visited to different places of the city for cleanliness campaign. **-Ritu Sharma**



Court acquits Pastor and 11 others accused of violence

New Delhi: A district court in Madhya Pradesh on Oct. 10 acquitted a Christian Pastor and 11 others three years after they were booked on charges of attacking a group of Hindus. The Mandelshwar District and Sessions Court of Madhya Pradesh having heard the witnesses found that it was Pastor Damar Singh and others who had been beaten up.

Judge Sangeeta Dawar Maurya acquitted all 12 of all charges. A mob of suspected hardline Hindu activists attacked the Pastor's Prayer Service on Good Friday of 2015. Later, the Pastor and 11 others were booked, reportedly under pressure from the mob, for stone pelting, abusing, beating up and for making life threatening calls. Allied lawyers of ADF India, a human rights organization, approached the Court to secure freedom of religion and belief guaranteed under the constitution.

Archdiocese at a glance... cont.



Teachers' Day St. J. P. School



Holy Rosary Feast Celebration, Baster Mission



Honouring Teachers, Sadbhavna, Agra



Poor Clares (Cloistered Sisters) arrive in Agra



Presbytery Foundation, Kaulakha



Blessing of 2 new school buildings at Shastripuram & Anoop Nagar



Recipients of S. Thomas Memorial Scholarship

Congratulations...



Sheryl Lazer, ICSE, 95%
St. Patricks College, Agra



Anysha M. Kumar, ICS,
95.25% (Com.) St. George's Agra



Daisy Mathew, (Topper)
B.A. (Hons) DEI, Agra



Congratulates! Li. Jarvis Thomas
on your 1st posting, Bathinda



St. Patrick's Church, Pilgrimage, Sardhana



Sr. M. Goretti Lakra FDCC, G. Jubelarian, FZD



R.I.P.
Bhagwan Dei, 88 (Died 12 Oct, 2018)
M/o Bhagat Singh (Pappi), Jaith

With Best Compliments From:

The Manager, Principal, Staff & Students of

St. Peter's Senior Secondary School

Bharatpur (Rajasthan)



For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 7060701187

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com